माह जुलाई 2024 से सितम्बर 2024 वर्ष 10 अंक 3 मुल्य 50

साहित्य सरोज

RNI N0-UPHIN/2017/74520, ISSN N0-2548-0843(Print)

माइक्रोफाइनेंस

माइक्रोफाइनेंस माइक्रोफाइनेंस माइक्रोफाइनेंस

कैसे बचे जिन्दगी

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-10 अंक -3

RNI No- UPHIN/2017/74520

ISSN N0-2548-0843(Print)

माह जुलाई 2024 से सितम्बर 2024

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक कान्ति शुक्ला

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: डा० अखंड प्रताप सिंह, गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय -:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो0 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-: https://www.sarojsahitya.page/

प्रति अंक -५० रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

संपादक मंडल –

ओम जी मिश्र, श्रीमती रेनुका सिंह, ज्योति किरण रतन (लखनऊ)
डॉ प्रिया सूफी (होशियारपुर), डॉ राम कुमार चतुर्वेदी (सिवनी)
संतोष शर्मा शान (हाथरस),
तकनीकी संपादक - राजीव यादव (नोएडा)
कानूनी सलाहकार - अशोक सिंह एडवोकेट (गहमर)
प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत कुमार सिंह (गहमर)

संपादक मंडल से जुड़ने के लिए काल करें

9451647845

कहाँ क्या

संपादकीय 02
गोपालराम गहमरी -सतेन्द्र पाठक 03
कान्ति शुक्ला का संस्मरण वाह!रे 04
साधना की कहानी एक 05
पत्रकार का प्रेम-पत्र 06
पुष्पा की कहानी माधुरी 07
स्नेहलता की कहानी भाभी माँ 09
साधना की कहानी माटी की महक 11
हेमंत की कहानी सुजाता 13
शिक्षक दिवस- डॉ रामकुमार 15
राजमती की कहानी आखिर 16
सुनीता की कहानी कीमत 18
शालिनी की कहानी मजबूर 20
सुमन लता की कहानी मातृत्व 22
रमा भाटी की कहानी कन्यादान 24
लाला दूनीचंद्र - किरण बाला 26
विज्ञापन और-ज्योति किरण रतन 27
देश सुरक्षित - हृदय नारायण 28
अभिलाषा बनी मिसेज छततीसगढ़ 30
शीला की कलम से अहिल्याबाई 31
फिटनेस कोच का प्रेम-पत्र 33
डॉ रेनु सिंह की कहानी पुनर्वास 34
किरण बाला की कहानी पानी के 35
संस्कार की पाठशाला 36
माइक्रोफाइनेंस सफल जीवन-मनोज 37
सोशलमीडिया जरूरी?- मुस्कान 39
कविता
प्रिया देवागंन, कुमकुम काव्यकृति, संतोष शर्मा साहिल 40

आगामी अंक संस्मरण विशेषांक

9451647845

संपादकीय

आज फिर एक युवक फिर असमय काल के गाल में समा गया। इस बार भी कारण मोटरसाइकिल बनी। मैनें उस युवक के कई मित्रों की पोस्ट देखी। सबके दिलों में उसके बेसमय जाने का गम था, दर्द था। मगर आपने कभी सोचा है कि जब आप उसके मित्र है तो आपको इतना दर्द और गम हो रहा है तो उसके मॉ-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी पर क्या गुजर रही होगी जिनके अहंखों का तारा था वह? ऑखो का सपना था वह।

मैनें ने दुर्घटना की त्रासदी झेली है। जब एम्बुलेंस में ऑखो का तारा सामने रहता है तो उसके दिल पर जो बीत रही होती है उसकी कल्पना भी आप नहीं कर सकते। उनकी ऑखो में बेबसी झलकती है। हर पल उनकी सांसे थमने लगती है। मां जिसने ९ महीने कष्ट सह कर आपको पाला, वह मिनट के अंदर आपकी सलामती के लिए न जाने कितने व्रत और देवी-देवताओं से मन्नत मांगने लगती है। मगर हर मां की आशा बनी रहे यह नहीं होता। बहुतों को जिंदगी भर का कष्ट मिल जाता है। और इसका कारण बस बाइक का ५० से ऊपर होना होता है। यह बीस का अधिक होना कितनी दुनिया उजाड़ देता है मैनें देखा है। अभी कुछ दिन पहले गहमर इंटर कालेज के सामने एक युवक की दुर्घटना में मृत्यु हो गई, अभी उसके पत्नी की हाथो की मेंहदी भी नहीं छूटी थी, महज १६ दिन हुए थे विवाह के।

गहमर के तेलियाटोला में मेडिकल स्टोर चलाने वाले संजय सिंह वर्षो बीत जाने के बाद भी उस दुर्घटना को न भूल पाये होगें न उसके दंश से ऊपर पायेगें, जिसमें न सिर्फ उनके मित्र चले गये बल्कि वह भी आज तक उस दुर्घटना का कष्ट झेल रहे हैं।

मेरा घर गहमर से सड़क के किनारे एक संम्पर्क मार्ग पर है। देर रात तक फर्राटा भरती तेज आवाज की गाड़ीयों का शोर सुनाई देता है। ऐसा लगता है कि १ मिनट देर हुई तो भूचाल आ गया। कभी किसी को टोक दो तो ऐसा लगता है कि कितनी बड़ी गलती आपने कर दिया। इस तेज रफ्तार में सबसे अधिक चलने वाले कम उम्र के बच्चे से लेकर २५ साल के युवा अधिकांश होते हैं। चाहे वह मोटर साइकिल चला रहे हों या ४ चक्का वाहन। और यदि किसी लक्जरी गाड़ी का स्टेरिंग उनके हाथ में है फिर तो पूछना ही नहीं। सड़क कौन सी है? भीड़ कितनी है? कोई मतलब नहीं होता। उनकी न चाल कम होती है न स्टाइल।

कभी अपने आसपास के ट्रामा सेंटर में जाईये तो पता चलता है कि भर्ती रोगीयों में ८० प्रतिशत सड़क दुर्घटना के शिकार हो कर आये हैं। परिजन इलाज को, बेड को तड़प रहे हैं। अंजाने डर से सोना-खाना भूल गये हैं।

देखा जाये तो किसी का अचानक मुड़ जाना, बच्चों का चलते हुए सड़क पर गिर जाना, नशे में वाहन चलाना, मौसम की खराबी, वाहन में खराबी होना दुर्घटनाओं के कारण है । लेकिन दुर्घटनाओं का ९० प्रतिशत कारण वाहन पर से नियंत्रण खो बैठना, सड़क पर किसी जानवर या आदमी का अचानक बीच में आ जाना, नींद लग जाना है। जिस पर कम रफ्तार वाले वाहन तो आसानी से काबू पा जाते हैं । लेकिन वाहन की रफ्तार ५० की जगह ८० रहने पर दुर्घटना निश्चित है। अकसर देखा जाता है कि हम घर से निकलते हैं और बाजार जाने या घर के पास जाने के नाम पर हेलमेट नहीं लगाते, हेलमेट को हम पुलिस से बचाव की चीज ही समझते हैं, लेकिन असल में देखा जाये तो हेलमेट पुलिस से नहीं हमें जिन्दगी खोने से बचाता है।

मैने बहुतो को देखा है कि यदि वह घर से १०० मीटर दूर जाने के लिए भी बाइख उठायेंगे तो उनके सर पर हेलमेट जरूर होगा। उनकी इस आदत को हम सब को अपनाना होगा।

लगातार होते हादसों पर लगाम लगाने में शासन-प्रशासन, माता-पिता सफल नहीं हो रहे है, इस लिए हम इसकी कमान खुद आज के युवाओं को थाम लेनी चाहिए। ताकि वह अपने किसी प्यारे मित्र को खोने का दंश न झेले। वह आपस में तय करें कि हम वाहन को हवाई जहाज नहीं वाहन की तरह चलायेगें और न किसी अपने या अपने मित्र को चलाने देगें। अपने वाहन की प्रतियोगिता ट्रेन से न करायेगें न करेगें। जो ऐसा करे उसका बहिष्कार करें। दाम-साम-दंड-भेद सब यतन कर इसे रोंके।आज यदि आज का युवा ऐसा कर सका और एक भी घर उड़ने से बचा लिया तो यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी अपने असमय काल के गाल में समाये एक मित्र को, अपने एक हमजोली को, अपने एक साथी को। आप ही आगे आकर रोक सकते हैं किसी मां के आंसू।

प्रिय पाठक बंधु साहित्य सरोज इस वर्ष २५ दिसम्बर २०२४ से सड़क हादसों पर जनगारूगता फैलाने के लिए एक देश-व्यापी अभियान की शुरूआत करने जा रहा है। मेरा आप सभी से निवदेन है कि आप चाहे जो कर रहे हो, देश के किसी कोने में रह रहे हो, देश हित में समाज आईये हमारे साथ मिल कर हम किसी के दूध, किसी के सुहान और किसी के रेश्मी धागों को टूटने से बचाने, किसी पुत्र-पुत्री को अनाथ होने से बचायें। किसी बाप के बुढ़ापे की लाठी को बचायें।

आप तन-मन-धन से हमारे साथ जुड़ कर इस अभियान में सहभागी में बने, हम देश के हर कोने में जाकर इस जन-जागरूकता अभियान को विभिन्न माध्यमों से फैलायेगें। और प्रयास करेगें कि इस मृत्यु की रफतार में रोक लग सकें।

अखंड प्रताप सिंह

संपादक साहित्य सरोज 9451647845

गोपालराम गहमरी

हिंदी के महान सेवक, उपन्यासकार तथा पत्रकार ने वर्षों तक बिना किसी सहयोग के 'जासूस' पत्रिका निकाला और २०० से अधिक उपन्यास , सैकड़ों कहानियों के अनुवाद किए थे । रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'चित्रागंदा' काव्य का प्रथम हिंदी अनुवाद गहमरीजी द्वारा अनुवाद किया गया था । वे हिंदी की अहर्निश सेवा की, लोगों को हिंदी पढने् को उत्साहित किया, ऐसी रचनाओं का सृजन करते रहे कि लोगों ने हिंदी सीखी। लेखक की कृतियों को पढ़ने के लिए गैरहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी गोपालराम गहमरी थे। गहमरी ने प्रारंभ में नाटकों का अनुवाद किया, उपन्यासों का अनुवाद करने लगे। बंगला से हिन्दी में किया गया इनका अनुवाद तब बहुत प्रामाणिक माना गया है। गोपालराम गहमरी ने कविताएं, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध और साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया, लेकिन प्रसिध्दि मिली जासूसी उपन्यासों के क्षेत्र में। 'जासूस' नामक एक मासिक पत्रिका निकाली। इसके लिए इन्हें प्रायः एक उपन्यास हर महीने लिखना पड़ा। २०० से ज्यादा जासूसी उपन्यास गहमरीजी ने लिखे। 'अदभुत लाश', 'बेकसूर की फांसी', 'सर-कटी लाश', 'डबल जासूस', 'भयंकर चोरी', 'खूनी की खोज' तथा 'गुप्तभेद' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। जासूसी उपन्यास-लेखन की जिस परंपरा को गहमरी ने जन्म दिया था । साहित्यकारों में गोपाल राम गहमरी हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यास के जनक है। वे हिंदी के महान सेवक, उपन्यासकार तथा पत्रकार थे।

उन्होंने ३८ वर्षों तक बिना किसी सहयोग के 'जासूस' नामक पत्रिका का संचालन किया। उन्होंने दो सौ से अधिक उपन्यास लिखें, सैकड़ों कहानियों के अनुवाद किए, जिनमें प्रमुख रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'चित्रागंदा' भी थी। वह ऐसे लेखक थे जो हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या में इजाफा कर सके। हिन्दी भाषा में देवकीनंदन खत्री के बाद यदि किसी दूसरे लेखक की कृतियों को पढ़ने के लिए गैरहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी तो वह गोपाल राम गहमरी थे । गहमर निवासी रामनारायण के पुत्र गोपाल राम गहमरी का जन्म सन् १८६६ (पौष कृष्ण ८ गुरुवार संवत् १९२३) में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गहमर में हुआ था। छह मास की आयु में गोपाल राम के पिता का देहांत होने के बाद इनकी माँ इन्हें लेकर अपने मायके गहमर चली आईं। गोपाल राम की गहमर में प्रारंभिक शिक्षा वर्नाक्यूलर मिडिल की शिक्षा प्राप्त की थी । १८७९ में मिडिल उतीर्ण होने के बाद गहमर स्कूल में चार वर्ष तक छात्रों को पढ़ाते रहे और उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। पटना नार्मल स्कूल में भर्ती हुए, जहां इस शर्त पर प्रवेश हुआ कि उत्तीर्ण होने पर मिडिल पास छात्रों को तीन वर्ष पढ़ाना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण शर्त को स्वीकार कर लिया। गहमर से अतिरिक्त लगाव के कारण गोपाल राम ने अपने नाम के साथ अपने ननिहाल को जोड़ लिया और गोपाल राम गहमरी कहलाने लगे थे । बंबई में गहमरी की कलम गतिशील रही। गोपाल राम गहमरी ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के पूरे मुकदमे को अपने शब्दों में दर्ज किया था। उनके सम्पादन में प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं की एक लंबी श्रृंखला है। प्रतापगढ़ के कालाकांकर से प्रकाशित 'हिन्दुस्थान' दैनिक , बंबई व्यापार सिन्धु, गुप्तगाथा, श्री वेंकटेश्वर समाचार और भारत मित्र हैं। उनमें हिंदी भाषा के लिए कुछ अलग और वृहत करने की बेचैनी थी और दूसरी ओर उनके भीतर पनपती 'जासूस' की रूपरेखा थी । गहमरी ने मासिक पत्रिका 'जासूस' का प्रकाशन शुरू किया, जिसका विज्ञापन उनके ही संपादन में आने वाले अखबार 'भारत मित्र' में दिया था । वर्ष १९०० के दौरान किसी पत्रिका के इतिहास में नाम अंकित हुआ है । देवकी नंदन खत्री और गोपाल राम गहमरी के द्वारा शुरू 'जासूसी लेखन' की परंपरा साहित्यिक पंडितों की उपेक्षा और तिरस्कार के बावजूद गहमरी और खत्री की बदौलत लंबे समय तक चलती रही। हिन्दी में 'जासूस' शब्द के प्रचलन का श्रेय गहमरी है। गहमरी ने लिखा है कि '१८९२ से पहले किसी पुस्तक में जासूस शब्द नहीं दिखाई नहीं पड़ा था।' 'जासूस' अंक में एक जासूसी कहानी के अलावा समाचार, विचार और पुस्तकों की समीक्षाएं नियमित रूप से छपती थी । गहमरी की 'जासूस' ने प्रारंभिक अंकों से पाठकों में लोकप्रियता प्राप्त की। गोपालराम गहमरी जासूसी ढंग की कहानियों और उपन्यासों के लेखन की ओर प्रवृत्त हुए थे । गहमरी के योगदान को केवल जासूसी उपन्यासों तक सीमित किया जाता है, बल्कि उनका योगदान हिंदी गद्य साहित्य में अद्वितीय है। हिन्दी अपने विकास काल में हिंदी गद्य साहित्य ब्रजभाषा व खड़ीबोली का द्वन्द झेल रहा था तब गहमरी न केवल खड़ीबोली के पक्ष में खड़े होते हैं बल्कि ब्रजभाषा के पक्षकारो को खड़ीबोली के पक्षकारो में शामिल करते हैं। सहज, सुगम, सुंदर और सुबोध हिंदी-प्रचार गहमरी जी की साहित्य सेवा का मुख्य उद्देश्य था। हिंदी गद्य साहित्य के विकास में गोपाल राम गहमरी के जासूसी उपन्यासों के महत्तवपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। गहमरी जी का निधन १९४६ ई. में हुआ था ।

जासूसी शब्द के जनक प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की स्मृति में गहमर जी की जन्मभूमि गहमर में साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा 'गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह पिछले १० वर्षों से किया जाता है ।

सत्येन्द्र कुमार पाठक

9472987491करपी , अरवल , बिहार 80441

संस्मरण

हमारे परिचित एक परेशान हाल पति अपनी बेहोश पत्नी को लेकर हास्पिटल पहुँचा। गंभीर स्थिति को देखकर उसे इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कर लिया गया और वहाँ मौजूदा चिकित्सक उसकी चिकित्सा करने में जुट गए। एक डाक्टर ने पति से पूछा कि बेहोश होने के पहले आपकी पत्नी ने क्या तकलीफ़ बताई थी। पति बोला -हाँ कह रही थी दिल घबड़ा रहा है और बहुत जोरों से हाथों में जलन हो रही है। डाक्टर चौंका- हाथों में जलन, ये कार्डियक अटैक में हाथों की जलन कौन सा नया ट्रेंड आ गया। उसने अपने सीनियर को बताया। हास्पिटल में अफ़रा-तफ़री मच गई।

सारे हार्ट स्पेशलिस्ट यहाँ तक कि हेड आफ दि डिपार्टमेंट भी उस महिला के इर्द-गिर्द जमा हो गए और गहन जांच प्रक्रिया शुरू हो गई परंतु कुछ विशेष समझ में नहीं आ रहा था।

डाक्टर चिंतित से विमर्श करने में व्यस्त हो गए कि अटैक में तीव्र दर्द ऐंठन तो स्वाभाविक है पर ऐसी हाथों -हथेलियों में जलन जैसा तो नहीं सुना, यह तो कोई रेयर केस लग रहा। फिर डाक्टर महिला के पति से मुखातिब होकर बोले, अभी आप काउंटर पर फिलहाल एक लाख रुपए जमा कर आइए - इनकी कई जांचें और करनी पड़ेगीं तब शायद कुछ नतीजा हासिल हो, एकदम नयी तरह का केस है। तभी महिला ने आँखें मिचमिचाईं डाक्टर सतर्क हो गए और महिला के पूरी तरह से होश में आने की प्रतीक्षा करने लगे।

खैर महिला होश में आई तो डाक्टर ने पूछा आपको पहले भी कभी दिल घबड़ाने के साथ हाथों में जलन हुई है क्या। महिला बोली हाँ अक्सर। अब तो डाक्टरों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। महिला आगे बोली- डाक्टर साहब तबियत ख़राब होने के पहले मैंने हरी मिर्चें काटी थीं जो बहुत तेज रहीं फिर पकौड़े तल रही थी तो मिर्च भरे बेसन में देर तक हाथ रहा इसलिए बहुत जलन हो रही थी अभी तक ठीक नहीं हुई। अब स्तब्ध होने की बारी डाक्टरों की थी जो एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे।

कान्ति शुक्ला, प्रधान संपादक, साहित्य सरोज

गहमर, गाजीपुर (उ0प्र0) से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य सरोज

RNI No. UPHIN/2017/74520
ISSN 2587-0843

ग्राम-गहमर, रघुवंश सिंह का कटरा, मेन रोड, जनपद गाजीपुर (उ0 प्र0) 232327

sarojsahitya55@gmail.com, Mo 9451647845, https://sahityasaroj.com

जानें पहचानें

यदि आप लेखक, रचनाकार, कलाकार या पत्रकार हैं तो आप अपना विस्तृत परिचय, कार्य, पुस्तकों एवं सम्मानों की जानकारी हमारी सूचना बेवसाइट www.sarojsahitya.page पर दिये प्रारूप के अनुसार भेजें। जिसे हम अपनी साहित्य सरोज की बेवसाइट पर करेगें प्रकाशित। आप उसे अपने परिचय के लिए कहीं भेज भी सकते हैं।

एक वायदे की खातिर

अखंड सुहाग के व्रत तीज को सोसायटी की सभी सौभाग्यवती महिलाएँ अपनी सुहाग की रक्षा हेतु रखी थीं। तीज की संध्या भक्ति रस में पूरी तरह सराबोर थी। सभी विवाहित महिलाएँ सोलह ॠंगार करके समिति के पास वाले मंदिर में सोलह ॠंगार की सामग्री, फल- फूल, मिठाइयाँ, मेवे आदि लेकर पूजा-अर्चना कर शिव- पार्वती के भजन गा रही थीं। तभी रैना भी सोलह श्रृंगार करके अपने हाथ में पूजा की थाली लिए शंकर- पार्वती के भजन गुनगुनाते हुए जैसे ही मंदिर में प्रवेश की सभी महिलाओं की प्रश्नवाचक नज़रें उसे घूर-घूर कर ऐसे देखने लगीं मानो उसने कोई बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो।सबकी नज़रें उससे यही सवाल कर रही थीं,यह विधवा आखिर किसके लिए इतना सजी-धजी हुई है?यह कुल्टा है ज़रूर इसका किसी न किसी से अफेयर है। इसके पति को मरे हुए पाँच साल हो गए फिर यह कैसे और क्यों इतना श्रृंगार की हुई है। इस तरह सभी की प्रश्नवाचक नजरें उसको घूरकर उसके अंतर्मन को लहूलुहान कर रही थीं। किंतु, रैना बिना किसी को ज़वाब दिये मंदिर के अंदर प्रवेश कर भक्ति- भाव से भगवान की पूजा-अर्चना कर भगवान को प्रणाम की और जिस तरह से सिर झुकाकर मंदिर में प्रवेश की थी उसी तरह से सिर झुकाए वह मंदिर से बाहर आकर अपने घर चली गई ।

अपने घर आकर वह हाथ में कुछ पकड़कर(रमन की फोटो) फूट-फूट कर रोने लगी। उसी समय उसकी सात साल की बेटी सुरभी उसके पास आई और उसे इस तरह रोते हुए देखकर उसके रोने का कारण पूछने लगी। तब उसने अपनी बेटी को गले लगाकर कहा बेटा मैं मंदिर गई थी पैर स्लिप कर गया और गिर गई, चोट लग गई है। चूँकि सुरभी अभी बहुत छोटी थी इसलिए वह मम्मी का झूठ पकड़ नहीं पाई और उसे यही लगा कि मम्मी गिरकर चोट लगने की वज़ह से ही रो रही हैं।

साल दो साल और बीतने के पश्चात समय के साथ-साथ सुरभी बड़ी हुई वह बाहर बच्चों के साथ खेलने जाने लगी, तभी कुछ बच्चे सुरभी को ताना मारते हुए बोले, तेरी मम्मी तो विधवा हो कर भी पता नहीं क्यों सजती-सँवरती हैं, जबकि विधवा औरतें नहीं सजती-सँवरती हैं। तेरी मम्मी बिल्कुल अच्छी नहीं है। बच्चों की यह बातें सुरभी कोमल मन पर अमिट छाप छोड़ दी। सुरभी रोते हुए अपनी मम्मी के पास आई और वह पूछने लगी मम्मी क्या तुम विधवा हो?

सुरभी के मुँह से ऐसी बात सुनकर रैना काँप उठी। रैना के इस प्रकार चुप्पी साधने पर सुरभी पुनः रैना को कुछ झिंझोटते हुए और कुछ चिल्लाते हुए बोली, मम्मी आप कुछ बोलती क्यों नहीं क्या आप विधवा हैं? । रैना कुछ भी बोल सकने की स्थिति में नहीं थी। सुरभी की बात सुनकर रैना लगभग मुजरिम की तरह खड़ी हो गई। सुरभी फ़िर चिल्लाते हुए बोली, मम्मी मैं आपसे पूछ कुछ रही हूँ क्या आप विधवा हैं? सुरभि की बात को सुनकर रैना उसके प्रश्न का उत्तर देने में असहज महसूस कर रही थी? किंतु,सुरभी के इस प्रकार चिल्लाते हुए पूछने पर ,रैना भी चिल्लाते हुए बोली हाँ- हाँ मैं विधवा हूँ। ५ साल से विधवा हूँ बोलो क्या करना है? क्या सज़ा देना है तुम्हें मुझे ? तब सुरभी ने कहा, अगर आप विधवा हैं तो फिर सजती-सँवरती क्यों हैं ? और आज तक आपने मुझे बताया क्यों नहीं? तब रैना ने सुरभि के ऊपर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा बेटा 'एक वायदे के खातिर'। सुरभी ने पूछा कैसा वायदा मम्मी? तब रैना ने रोते हुए कहा, जब तुम्हारे पिताजी

जीवन की अंतिम साँसें से ले रहे थे तब उन्होंने मुझसे तुम्हें सदैव खुश रखने का तथा मैं कभी विधवा के भेष में नहीं रहूँगी का वायदा लिया था। उन्होंने कहा था, तुम मेरी बेटी को नहीं बताओगी कि उसके पिता दुनिया में नहीं हैं। तुम उसे यही बताओगी उसके पिताजी ज़िंदा हैं वो बहुत दूर नौकरी करने के लिए गए हैं। जब वह पढ़- लिखकर बड़ी आदमी बन जाएगी तब वो लौटकर आएँगे। उसी वायदे को निभाने के लिए मैं सजती-सँवरती हूँ और मैंने कभी भी तुम्हारे पापा के बारे में तुम्हें नहीं बताया। रैना की बातों को सुनकर सुरभी अपनी माँ के गले लग गई। वह फूट फूट कर रोते हुए बोली,माँ तुम मेरी खुशी के लिए दुनिया वालों के ताने सुनती रही, तुम एक वायदे को निभाने के लिए इतना कष्ट सहती रही। तुम महान हो वह तुरंत श्रृंगार दानी लाई और अपने हाथों से अपनी माँ को सजाने लगी और उस दिन सुरभी ने भी अपनी माँ से एक और वायदालिया कि माँ आप आजीवन इसी प्रकार सज- सँवरकर, हँसते- मुस्कुराते, खिलखिलाते हुए रहेंगी। आप कभी भी उदास नहीं होंगी। आप कभी भी विधवा के भेष में नहीं रहेंगी? क्योंकि मेरे पापा आपको जिस रूप में देखना चाहते थे मैं भी आपको उसी रूप में देखना चाहूँगी। आप मुझसे भी एक वायदा करिए कि आप हमारे और पापा के वायदे को निभाते हुए हमेशा खुश रहेंगी और जैसे आप रहती हैं वैसे ही रहेंगी। दुनिया वालों का क्या है उनका तो काम है कहना, लेकिन आप दुनिया वालों की परिवाह न कर हम दोनों के वायदे के अनुसार अपने आप को हमेशा खुश रखने का हर संभव प्रयास करेंगी।

साधना शाही
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर -8808314399

पत्रकार का प्रेम-पत्र

प्रिय

"प्रेम की खबरः आपकी ओर से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में" प्रेम, जिसे आज की भाषा में सबसे बड़ी ब्रेकिंग न्यूज़ कहा जा सकता है, इस पत्रकार के दिल में भी एक ख़ास जगह बना चुका है। रिपोर्टिंग के दायरे से बाहर निकलते हुए, मैं आज आपके लिए व्यक्तिगत अनुभव साझा करने को मजबूर हूँ। यह ख़बर सिर्फ़ आपके लिए है दृ सबसे एक्सक्लूसिव, सबसे ट्रेंडिंग और सबसे संवेदनशील!आपके सौंदर्य की ब्रेकिंग न्यूज़ जब पहली बार मेरी नज़रों में आई, तब से दिल की धड़कनें एक तरह की हेडलाइन बनने लगीं। आपकी मुस्कान के हर हिस्से को देखते ही ऐसा लगता है जैसे फ्रंट पेज की सबसे बड़ी खबर को ब्रेक किया गया हो। उस दिन से मैं आपके हृदय का संवाददाता बन चुका हूँ। किसी भी प्रेस कांफ्रेंस या इंटर्व्यू में मुझे जितनी तत्परता नहीं दिखती, उतनी आपके एक इशारे के इंतज़ार में रहती है। आपका इशारा मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी एक्सक्लूसिव स्टोरी है, जिसे कोई भी पत्रकार अपने जीवन के पहले पन्ने पर छापने से नहीं चूकेगा। जब भी आप मेरे करीब होती हैं, ऐसा लगता है जैसे मौसम विभाग की भविष्यवाणी सही हो गई हो। हल्की बारिश, मंद हवा और आकाश में इंद्रधनुष। मेरे दिल के सारे कैमरे आपके चेहरे पर फोकस किए हुए हैं, और हर शॉट एक 'पुलित्ज़र पुरस्कार' के लायक होता है।

अब मैं इस रिपोर्ट को आपकी अदालत में भेज रहा हूं। इस ख़बर पर आपकी प्रतिक्रिया बेहद महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि यह मेरी व्यक्तिगत फ़ाइल का सबसे संवेदनशील मामला है। अगर आप इसे हरी झंडी दिखाती हैं, तो हमारी प्रेम कहानी की सीरीज को आगे बढ़ाया जा सकेगा। प्रेम की इस ख़बर को अधिक न रोके जाने की गुजारिश है, क्योंकि मैं अगले अपडेट का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। आशा है कि आपका उत्तर सकारात्मक होगा ताकि हमारी प्रेम कहानी का भविष्य उज्ज्वल हो सके।

सप्रेम,
आपकी व्यक्तिगत रिपोर्टर

सीमा रानी, पटना, बिहार

पुष्पा की कहानी माधुरी

रामलाल जी और उनकी धर्मपत्नी फूल देवी जिला कन्नौज फर्रुखाबाद से अजमेर आये थे। यहाँ लकड़ी का काम करके अपना जीवन गुजर करते थे । बाद मे कारखाने में काम मिल गया। पूरा महीना काम करने पर मात्र १५० रुपये मिलते थे। उसी पैसो से घर का खर्चा चलता था।

वो समय भारत का अनमोल था। इंसान के लिए खाना और कमाना था। सब मेहनत करते थे, बुजुर्ग लोग कहते है, हमने जो पानी पिया है उसमें भी ताकत थी। आज का गेहूं, दाल, दूध सब में मिलावट है।हमारे ज़माने में एक रू किलो शुगर, चार आने किलो दूध, छह आने की नहाने का साबुन, चार आने का कपड़े धोने का साबुन, पूरे महीने के ७० रुपये का खर्च था। तिल्ली की दुकान से गेहू ४० रू का एक क्विंटल आ जाता था।सुबह ४ बजे उठ कर फूल देवी घर पर चक्की से गेहूं पीस लेती थी । नेहरू जी का समय था। फूल देवी के १६ बच्चों मे से दो पुत्र ही बचे थे। पुत्र सुरेश बड़े बेटे, जो कि सातवे महीने में ही जन्म हो गया था । बड़ी मन्नतों से पाल पोस कर बड़ा किया। मोहल्लों मे साफ सफाई करने वाली रानी जी से फूल देवी और उनके पति ने कहा था। मोहल्ले मे घूम कर सभी के घर से कपड़े लाओ । उन कपडों को सुरेश बेटे को पहनाया गया। रुई का बिस्तर था उसमें रखा जाता था, बड़ी मन्नतों से पाया था। कोई भी घर में आ जाए तो उनको नहीं दिखाते थे। घर के बुजुर्ग कहते थे बुरी आँखों से बचाओ। बाद में भगवान ने वापस सुनी और फिर से बेटे को जन्म दिया, पिता ने खुशियां मना कर कारखाने मे लड्डू खिलाए। छोटे बेटे का नाम पिता ने रमेश रखा। दोनों बेटे माँ पिता के आज्ञाकारी थे। पूरे समाज मोहल्ले में राम, लक्ष्मण की जोड़ी थी। घर के सामने रामलाल जी के छोटे भाई ने शिव जी का मंदिर बन वाया था अपने माँ पिता की याद में। दोनों भाई प्रातः ४ बजे आरती करते, गायों भैस की सेवा करते, चारा देना, दूध निकालना घर के कामों को अपने हाथो से करना।

आज से ५० साल पहले भारत में ये ही दिनचर्या रहती थी। मन्दिर के पास कुआ था वहीं सब नहा कर मंदिर में पूजा अर्चना करते माता पिता को चरण स्पर्श करते थे, घर से बाहर जाते समय माता पिता को चरण छू कर जाते थे। फूल देवी सुबह अपने घर परिवार को माखन डाल कर पराठे और दूध का नाश्ता करवाती थी। शाम को सभी घर के चबूतरा में चारपाई पर बैठते थे।भगवान ने छोटे बेटे बहू को उपहार दिया उनकी गोद में नन्ही परी को भेजा। प्यारी-सी बेटी के घर मे आने से खुशियां आयी थी, दादा दादी मम्मी पापा ,परिवार मे बड़ी दादी ने छत पर जा के थाली बजाई थी।

घर मे ताऊजी और पापा के जन्म के बाद लक्ष्मी आयी थी। घर मे हवन में पंडित जी ने नन्ही बिटिया का माधुरी नाम रखा। धीरे धीरे समय गुज़रता गया, माधुरी के जन्म दिन बनाने की तैयारियों से घर मे चहल पहल हो रही थी कि अचानक माधुरी को तेज बुखार आ गया, सारे घर ने खाना पीना बंद कर दिया। माधुरी ने नौ महीने में ही चलना शुरू कर दिया था। माँ की नौकरी सावित्री कॉलेज में थी। माधुरी को घर में प्यार से गुड्डी बोलते थे। अपने दादी दादा के साथ खेलती ,खाती ,खुश रहती थी। माधुरी के बाबा जी साफा पहनते थे,

किसी काम से बाहर गए थे। माधुरी को बुखार तेज था। नन्ही सी जान के सिर पर गीली पट्टी रखी, पर कोई फर्क नहीं। दादी ने घर पर ही डॉक्टर भट्टाचार्य जी को बुलाया था।डॉक्टर भी सिर पर साफा बाँध कर आए।

जैसे....ही माधुरी ने बुखार में डॉक्टर को देखा। एक दम से बाबा बोल उठी। उसे लगा बाबा आ गए। तेज बुखार में बच्चे अपने बाबा को पहचान जाते हैं। जब बुखार नहीं उतरा ,माँ रोने लगी। तुरंत माधुरी को विक्टोरिया अस्पताल ले जाओ, दादी फूल देवी ने कहा। कार में बैठा कर गए। अस्पताल मे डॉक्टर ने देख कर दवा दी, घर ला कर माधुरी को दवा दी। माधुरी सो गई। बाद मे खड़ी नहीं हो पा रही थीं.......ओहो.... ..भाग्य में क्या लिखा है घबराये हुए विक्टोरिया गये। डॉक्टर ने इतनी आसानी से कह दिया। पोलियो हो गया है , इसका अब चलना मुश्किल है..........भगवान से विनती ,मन्नत , पूजा अर्चना सभी लोग करने लगे ।हे भगवान मेरी बेटी पर रहम करो।कभी माता पिता जयपुर, दिल्ली जाते सब जगह निराशा हाथ लगती पता नहीं किस कर्म की सजा मिली है..............माँ का हृदय रोता था, किसी को अपना दुःख कैसे कहें, दादी फूल देवी बहुत प्यार से समझाती दुःख देने वाला जो है वहीं सब ठीक करेंगे माँ अपने मन को कैसे समझाये, सब संकट में थे. ......डॉक्टर की सलाह थी जब पाँच साल की होगी तब दिल्ली मे पूरा इलाज होगा तब तक का समय बहुत कष्ट का

पाँच साल तक माँ इंतजार करती रही कब बड़ी होगी, कब इसका इलाज होगा। कब मेरी बेटी चलेगी।माँ दुर्गा की पूजा करती थी, कोई मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर नहीं छोड़ा।उस माँ को भगवान शक्ति दे रहे थे, परीक्षा ले रहे थे।नवरात्रों में व्रत करना ,घर मे पाठ हवन करवाना, दान करना।फूल देवी दादी घर पर ही कहानी, कविता सुनाती थी।

भगवान ने माधुरी को सुंदरता, बुद्धिमत्ता, जागरुकता, दया ,करुना सबसे परिपूर्ण बनाया था।अब सब्र खत्म होने वाला था। अब दिल्ली मे उसके पैर का एक साँचा तैयार हो रहा था, जिसको पहन कर चल सके ।माधुरी बहुत खुश थी, में भी अब स्कूल जाऊँगी, चलूँगी। माधुरी की खुशी देख सब की आंखे भर जाती, पर उसके सामने कोई रोता नहीं था।

सभी अभिप्रेरणा के साथ उसको खुश रखते थे। दिल्ली से नाप का पैर बना।भगवान को धन्यवाद किया, बनाने वाला भी वो बिगाड़ने वाला भी वो, शत शत नमन। स्कूल में माइक पर गाने, गाती स्पीच देती, फूलों की बारिश होती शुरू से अव्वल आना। अपने घर का नाम रोशन कर रही थी।जो भी देखता बस देखता रह जाता। सुंदरता ,मीठी बोली, मुस्कुराना सबको प्यार देना। जब बड़ी हुई विवाह के लिए देवता स्वरूप पति मिला। एक बेटा है, एक बिटिया है। भगवान ने सब कुछ दे दिया आज माधुरी दादी, नानी बन गई, सबको खुश रखती है, भगवान ने जैसा उनकी रक्षा करी ,सभी की करो माधुरी के माँ, पिता अब नहीं है पर भगवान उनके साथ है। धन्यवाद प्रभु ।

पुष्पा शर्मा
राजस्थान अजमेर
9414611430

EverGreen

स्नेहलता की कहानी
भाभी माँ

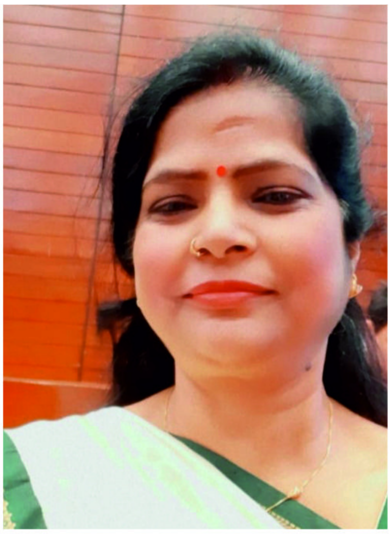

अरी ओ अनिता कुलटा -कुल्लछिनी कहाँ से आ रही है?"शादी के इतने साल बाद तूने अपने लच्छन दिखाने शुरू कर दिए। घर मे तो बहुत संस्कारी बहू बनती घूमती है। मेरी बेटी तुझे भाभी माँ -भाभी माँ कहते नहीं थकती है। तुमने क्या जादू कर दिया है उसके ऊपर?" कभी -कभी मैं सोचती हूँ कि इस बार बेटे के साथ क्यों नहीं गई तुम। जब वो यहाँ पर था तो उसके आगे - पीछे घूमती रहती थी, कमरे के बाहर नहीं निकलती थी। लेकिन जब वह नौकरी पर तुझे साथ चलने को कहा तो तुमने साफ मना कर दिया कि तुम इस बार उसके साथ नहीं जाओगी। मैं भी बावरी नहीं समझ पाई थी। अब मेरे समझ में आई कि तुझे अब नया यार चाहिए था इसलिये मेरे बेटे के साथ नहीं गई तुम। इसीलिए मेरी गैरमौजूदगी में छैल छबीली बनकर घर से निकल जाती है।

अनीता की सास उसपर आरोप पर आरोप लगाये जा रही थीं।क्या हुआ माँ जी आप ये क्या कह रही हैं?बहू अनिता ने सहज भाव से अपनी सास रमा देवी से कहा-"ज्यादा भोली मत बनो! मिसेज शर्मा ने तेरे बारे में सब बताया है कि तू कहाँ-कहाँ जाकर गुलछर्रे उड़ाती है। सिनेमा देखने जाती है, माल और न जाने कहाँ -कहाँ? आज तो मैंने भी तुझे एक आदमी के साथ होटल के बाहर देखा।"अनिता चुपचाप अपने कमरे में जाने लगी।

सास रमा देवी- "तुम्हें अब इस घर में रहने की जरूरत नहीं है। जाओ अपने मायके ,तुम्हारे माँ बाप को भी तो तुम्हारे करतूतों के बारे में पता चले कि लड़की को कैसे संस्कार दिये हैं । "मैं तुम्हें एक मिनट नहीं बर्दाश्त कर सकती इसी वक्त तुम घर छोड़कर चली जाओ नहीं तो तुम्हारे साथ मेरी बेटी कलिका भी बिगड़ जाएँगी जाने क्या जादू फेर दिया है उसके ऊपर। भाभी माँ -भाभी माँ कहते हुए तुमसे चिपकी रहती है। तुम्हारे खिलाफ एक शब्द भी सुनना नहीं चाहती।" तुम्हारी बातें बेटे को बताने को कहती हूँ तो कहती है भाभी माँ के बारे के कुछ भी उल्टा सीधा मत कहो किसी से नहीं तो मैं अपनी जान दे दूँगी।"

सास रमा ने अपना रौद्र रूप धारण कर लिया और वह अनिता को धक्के मारकर घर से बाहर निकलने लगीं।उनकी बेटी कलिका भी घर मे नहीं थी। अनिता हाथ जोड़कर कहती है- "माँजी मुझे दो दिन का समय दीजिये। मेरे माँ पिताजी तीर्थ यात्रा पर गए हैं।वे दो दिन बाद आ जाएंगे तो मैं यहाँ से चली जाउँगी।"

वह गिड़गिड़ाती रही लेकिन रमा देवी ने उसे घसीट कर घर से बाहर कर दिया और अंदर से दरवाजा बंद करने जा रही थीं तभी उनकी बेटी कलिका आ जाती है और उसे भाभी की हालत को देखकर बहुत दुख होता है। वह उन्हें को घर के अंदर ले जाती है।

कलिका - "भाभी मुझे माफ़ कर दो, मेरे कारण आपको माँ से इतना कुछ सुनना पड़ा, आज तो उन्होंने हद ही कर दी। आज आप अगर चली जातीं तो मै कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहती।"

अनीता - "तुम परेशान मत हो कलिका मैं तुम्हें उस शैतान की चंगुल से निकाल कर ही यहाँ से जाऊँगी।"

रमा देवी कुछ समझ नहीं पाती हैं । वह बेटी के ऊपर भी गुस्सा करने लगती हैं तब कलिका उनसे कहती है- "माँ अब मैं आपको बताने जा रही हूँ कि कुलटा कौन है इस घर में?"

अनिता- "कलिका क्या कर रही है चुप कर कुछ भी मत बोलना सब ठीक हो जाएगा।"

कलिका-"नहीं भाभी माँ अब मैं चुप नहीं रह सकती। "जब मैं दुष्ट नीतीश के झूठे प्यार के चंगुल में फँसकर अपना सबकुछ गँवा बैठी और आत्महत्या करने जा रही थी तो आपने मुझे बचाया । आपने मुझे समझाया और सहारा दिया।"

अपने गहने बेचकर पाँच लाख रुपये देकर उसके चँगुल से भी बचाया लेकिन वह अभी भी मुझे ब्लैकमेल कर रहा है। उसने अभी तक सारे अश्लील वीडियो और फ़ोटो नहीं डिलीट किये हैं अपने मोबाइल से जो कि एकदम फर्जी और झूठे हैं। जिसके लिए आप उसके पास जाती हैं। वो आपसे और पैसे माँग रहा है ये बात आपने भैया से भी नहीं बताया न ही पुलिस को ताकि मेरी और इस घर की बदनामी न हो। आप इसलिए इस बार भैया के साथ कानपुर भी नहीं गईं। मेरी करतूतों की सजा आपको मिल रही है। मैं बदनामी सह लूँगी पर आपको यहाँ से नहीं जाने दूँगी।"

तभी दरवाजे पर दस्तक होती है रमा देवी पुलिस को देख कर घबरा जाती हैं।

"अनीता शर्मा यहीं पर रहती हैं?-- "पुलिस द्वारा पूछने पर वह अपनी बेटी के लिये चिंतित होती हैं शायद पुलिस को उनकी बेटी के बारे में उस लड़के ने कुछ गलत शिकायत कर दी होगी या कुछ नई साजिश रचा होगा इसलिये पुलिस उसे लेने आई होगी लेकिन ये लोग अनीता को क्यूँ पूछ रहे हैं -"हे भगवान कहीं मेरी बेटी अनीता को बचाने के लिये झूठ तो नहीं बोल रही है उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था -वह दोनों को शक कि नज़र से देखती हैं।"

अनीता - "जी मैं ही अनीता हूँ।पुलिस कांस्टेबल - "मैडम आपने एक ब्लैमेलर के खिलाफ़ एफ. आई, आर दर्ज करवाया था। आपके बताये गये पते पर हमने एक ब्लैकमेलर को अरेस्ट किया है। आपको पुलिस स्टेशन चलना होगा उसकी पहचान करने के लिये। उसके पास से कुछ अश्लील फोटो औऱ वीडिओ भी बरामद हुये हैं। " अनीता औऱ कलिका पुलिस के साथ जाने लगती हैं तो रमा देवी भी जिद करके उनके साथ पुलिस स्टेशन जाती हैं। कलिका और अनीता उसे पहचान लेती हैं। उसके खिलाफ पुख्ता केस बन जाता है।

पुलिस इंस्पेक्टर - "अनीता जी आज आपके कारण इतना शातिर बदमाश पकड़ा गया है भोली भाली लड़कियों को फँसा कर अश्लील वीडियो बनाकर उन्हें ब्लैक मेल करना ही इसका धंधा था। अपनी बेइज्जती के डर से कई लड़कियों ने आत्महत्या तक कर ली।"

इंस्पेक्टर कलिका की तरफ़ देखते हुये - "आप किस्मत वाली थीं जो इनके कारण बच गईं।

अब अपना ध्यान रखना, किसी के बहकावे में मत आना।" रमा देवी का मुँह देखने लायक था। उन्हें अपने किये पर बहुत पछतावा हो रहा था।वे आँखों में आँसू भरकर अनीता को गले से लगा लेतीं हैं।

स्नेह लता पाण्डेय"स्नेह"
गाज़ियाबाद -उत्तरप्रदेश
85100 19424

एवरग्रीन पुस्तक प्रकाशन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
अपनी किताब प्रकाशित कराने हेतु संम्पर्क करें

साधना गुप्ता की कहानी
माटी की महक

अभी सुबह के सात ही तो बजे थे लेकिन सूरज अपनी पूरी तरुणायी के साथ आसमान में अपनी प्रचंडता का एहसास करा रहा था। बैलों को चारा डालते हुए गोविंद विचारों में खोया हुआ था कि सोहन की मोटरसाइकिल आकर खेत की मेड़ पर रुकी। आओ सोहन भैया ,उसने मुस्कुराते हुए सोहन का स्वागत किया। फिर क्या सोचा तुमने? किस बारे में? गोपाल ने अनजान बनते हुए प्रश्न किया । देखो गोपाल,इससे अच्छी ऑफर तुम्हें नहीं मिलेगी। कॉलोनाइजर खेत का एक करोड़ दे रहा है ।तू जिंदगी भर बैठ कर खाएगा, फिर लड़के को भी तो आगे पढ़ना है । इस खेती में क्या धरा है, सुबह से शाम मेहनत ,कभी बरसात हुई ,कभी नहीं। फसल ठीक से आती नहीं। वह तो ठीक है पर पिताजी मानेंगे नहीं। तो उन्हें मना ,वह तो पुराने जमाने के हो गए ,उन्हें तो दो रोटी से मतलब होना चाहिए, मुझे देख मैं खेत बेचकर कितना सुखी हो गया । पक्का मकान ,गाड़ी सब हो गया, लड़के को दुकान डलवा दी। ठीक है मैं शाम को पिताजी से बात करता हूं।

शाम को गोपाल घर पहुंचा ,पिताजी कच्चे आंगन में बैठे चाय पी रहे थे। विनय की मां ने उसे भी चाय ला कर दी ।चाय पीते हुए उसने बात शुरू की। दादा (पिताजी)इस साल अपनी फसल को पानी कम मिला ,गेहूं बिल्कुल सूख गए। यह सब तो खेती में चलता ही रहता है, एक होल और करवा ले पानी निकल आएगा। पर दादा उसके लिए भी तो पैसा चाहिए ,खेत में इस साल भी ट्रैक्टर मजदूर में जितना पैसा लगाया उतना तो निकला नहीं और तो और विनय भी इंदौर पढ़ने की जिद कर रहा है। तो उसे समझा, यही शहर के कॉलेज में दाखिल कर दे ।इंदौर पढ़ना जरूरी तो नहीं और देख गांव में खेत बेचने की चर्चा चल रही है पर यह बाप दादा की जमीन अपनी मां है अन्नदाता उसे बेचने की मत सोच। सोहन निरुत्तर हो गया। मां के न रहने से वह पिता से बात करने लगा था पर बहस उसने कभी नहीं की। आज भी दोनों बेटियों की शादी ब्याह ,जमीन जायदाद में पिता का निर्णय सर्वोपरि था। लेकिन विनय को वह कैसे समझाएं, हायर सेकेंडरी में पूरी स्कूल में उसने टॉप किया था। आगे वह इंदौर के इंजीनियरिंग कह्लेज में एडमिशन लेना चाहता था, पढ़ाई में वह अच्छा था इसलिए किसी अच्छे कह्लेज में एडमिशन का सपना गलत नहीं था परंतु उसकी फीस हजारों में थी, अभी वह बेटियों की शादी का कर्ज भी नहीं उतार पाया था। अंदर विनय की मां तनी हुई बैठी थी। क्या हुआ तुम्हें ?आज तो मेरी खैर नहीं लग रही । गोविंद ने मुस्कुराते हुए पूछा। जैसे तुम्हें मालूम ही नहीं ,विनय की मां दीपा चिढ़कर बोली थी। आज छोरा ने रोटी नहीं खाई तुम्हें मालूम है मैंने अपने लिए कभी कुछ नहीं मांगा ।इतनी दूर मैं भी भेजना नहीं चाहती हूं पर वह आगे पढ़ना चाहता है तो क्या बुरा है ,उसके दोस्त भी तो जा रहे हैं। ठीक है मैं कुछ ना कुछ व्यवस्था करता हूं... गोविंद ने बात समाप्त करते हुए कहा।

दूसरे दिन सोहन घर आ धमका। गोविंद ने आंख के इशारे से उसे बाहर आने का इशारा किया। चल तुम्हें घुमा के लाऊं,सोहन ने मोटरसाइकिल मोढ़ते हुए कहा। गोविंद पीछे बैठ गया ,गाड़ी वहां जाकर रुकी जहां सोहन और उसके भाई का खेत हुआ करता था। उस जगह पर एक आलीशान इमारत आकार ले रही थी। काफी बड़ा सीमेंट कंक्रीट से घिरा कैंपस था। सब तरफ जैसे सीमेंट के जंगल उग आए थे। गोविंद देखो यहां कितनी बड़ी फैक्ट्री डाली जा रही है ।अपने गांव के कई लोगों को रोजगार मिल जाएगा। गोविंद खामोश रहा, समझ

रहा था की खेती के मनचाहे दाम मिल जाने से सोहन बहुत खुश था और वह कहलोनाइजर का कमीशन एजेंट भी था। देखिए पड़ोस वाला खेत बिक चुका है। यहां कहलोनी कटेगी ,एक से एक सुविधा कैंपस में मिलेगी । मंदिर, स्विमिंग पूल ,बच्चो का गार्डन,स्कूल और वह क्या कहते हैं क्लब । शहर के लोगों को एकांत जगह बहुत पसंद आती है।सोहन हैरानी से देख रहा था।

कुछ ही दिनों में अन्नदाता धरती मां का गांव से जैसे नामोनिशान मिटने जा रहा है। हर तरफ सीमेंट कांक्रीट के जंगल आकर ले रहे थे। और देख मैंने व्हाइट मारुति भी बुक कर दी है। सोहन ने मोबाइल में फोटो दिखाते हुए कहा। अब गोविंद प्रभावित दिखाई दिया। खेत पर जाते हुए वह विचारों के झंझावात मैं डूब उतर रहा था। उधर गोविंद के दादा खेत पर पहुंच चुके थे ।सोहन के भाई ने उन्हें सब बता दिया था। जानते थे सोहन उनसे नहीं कह पा रहा। उन्होंने बड़ी हसरत से खेत के किनारे लगे हुए आम के पेड़ को देखा जो फलों से लदा हुआ था । इसी में झूला बांधकर गोविंद की दोनों बेटियां झूला करती थी। गोविंद के बेटे को कंधे पर बैठाकर खेत के पास तालाब तक लाते थे ।वह जब तक नहाता, वहीं खड़े रहते थे। उसी पोते को उन्होंने किसी को डांटना नहीं दिया और वह आज पढ़ना चाहता है ।

इधर पोते और इधर बाप दादा के खेत का मोह उन्हें विचलित कर रहा था। आखिरकार उन्होंने अपनी कशमकश पर विजय पाली थी। गोविंद!! उन्होंने आवाज दी.. जी दादा..। बेटा मैं कितने दिन का हूं और विनय के सामने भविष्य खड़ा है। कल तू उस कहलोनी वाले को हां कर दे, मैं दस्तखत कर देता हूं। नहीं दादा, खेत नहीं बिकेगा, मैं इसी फैक्ट्री में काम कर लूंगा और विनय की मां खेत संभाल लेगी और अपनी रकम बेच देगी। विनय की पढ़ाई पर आंच नहीं आएगी। यह जमीन मेरी मां है इसका सौदा नहीं होगा। दोनों घर पहुंचे, घर पर विनय मौजूद था। उसके चेहरे पर मुस्कान थी ,पिता को देखते ही बोला...पिताजी मैने शहर के कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का इंतजाम कर लिया है। वह अपने गांव के ही है, वह मुझे एडवांस देने को तैयार है। इस तरह फीस का इंतजाम हो जाएगा। मैं किसान का बेटा हूं ,मेहनत से नहीं घबराता। अब हमारी जमीन का सौदा नहीं होगा, तीनों की आंखों से खुशी के आंसू छलक उठे थे।

साधना गुप्ता
देवास-मध्य प्रदेश
9424899323

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण के लिए तत्काल मिलें।

हेमंत चौकियाल की कहानी सुजाता

मुम्बई जैसे भागदौड़ वाले महानगर से वह पहली बार अपनी सहेली मीना के साथ देवभूमि के प्रवेश द्वार रिशिकेश पहुंची थी। मीना पहाड़ की रहने वाली थी तो स्वभाव से ही वह एक आम पहाड़ी अल्हड़ युवती थी, जिसके स्वभाव में शर्मिलापन बचपन से ही शामिल था वही सुजाता महानगरीय वातावरण में पली बड़ी थी तो उन्मुक्त रहन सहन पहनावा और बोलचाल उसके व्यवहार में स्वाभाविक रूप से समाहित थी। दोनों आज ही राजधानी मेल से रिशिकेश पहुंची थी। दोनों की मुलाकात कक्षा तीसरी में प्रवेश के मुम्बई के मलाड़ इलाके में उस वक्त हुई थी वक्त हुई थी, जब दोनों के पापा एक ही जब विक्रम में सवार हुए थे।

बातों बातों में दोनों ने एक दूसरे का परिचय पूछा तो दोनों बच्चों ने भी अपने बाल स्वभाव के कारण एक दूसरे से शर्माते हुए बातचीत शुरू की थी। एक ही कस्बे से रोज शाला आने जाने के कारण बहुत कम समय में दोनों की दोस्ती हो गई। बातचीत में जब कभी भी मीना पहाड़ों के जन जीवन, रहन सहन की बात करती तो सुजाता कल्पनाओं के एक अनोखे संसार में पहुंच जाती। ऐसा होना कोई अस्वाभाविक बात भी नहीं थी। बाल मनोविज्ञान के जानकार कहते हैं कि बच्चों की सोच एक वयस्क की सोच से कई जादा अधिक गहरी होती है। राजधानी मेल से ही दोनों रात के ग्यारह बजे रिशिकेश रेलवे स्टेशन पर उतरे थे। पहाड़ी स्टेशन होने के कारण जून के इस मौसम में भी हल्की सर्दी बरकरार थी। दोनों ने अपने अपने बैग संभाले और चल पड़े। मीना के पापा ने पहले ही उन दोनों के लिए अपने एक जानकार के होटल में कमरा बुक कर रखा था। होटल के कमरे में पहुंचते ही जैसे ही सुजाता ने खिड़की खोली तो चन्द्रमा की रोशनी में सामने गंगा की कल कल करती, बल खाती लहरों ने उसका मन मोह लिया। मुम्बई जैसे भीड़भाड़ वाले महानगर में वे ऐसे दृश्य केवल नेशनल जियोग्राफी चैनल पर ही देख सकते थे। मन की उत्सुकता को प्रकट करते हुए उसने मीना से गंगा का जल छूने की बात कही तो मीना ने उसे आश्वस्त किया कि थोड़ा आराम करने के बाद वे गंगा के किनारे न केवल टहलेंगे बल्कि, पानी से अठखेलियाँ भी करेंगे। मन में सुबह होने तक का इंतजार लिए सुजाता जैसे ही बिस्तर पर पसरी कि गहरी नींद की आगोश में चली गई। मीना भी मोबाइल में ४ बजे का अलार्म लगा बिस्तर पर लेट गई। रिषिकेश के साफ वातावरण में एक गहरी नींद लेने के बाद सुजाता की नींद तड़के ४ बजे ही खुल गई। उसने बिना कोई आहट किये खिड़की खोली तो पुनः चांदनी रात में गंगा की कल कल करती लहरें मानों उसे अपने पास बुलाने के लिए आवाज कर रही हों।साढ़े तीन बजे ही सुजाता ने मीना को जगा दिया और गंगा किनारे जाने की जिद की। मीना भी फ्रेश होकर सुजाता का हाथ पकड़ कमरे से बाहर निकल पड़ी। दोनों ने लगभग दौड़ कर होटल की सीढ़ियाँ पार की और नदी किनारे के रेत में उतर पड़े। उन्हें नजदीक आता देख मनसुख ने अपनी नाव ठेल कर पानी में उतार दी। मनसुख इस घाट का वो पहला नाविक था जो सबसे पहले अपने काम पर पहुंच जाता था। चालीस साल हो चले थे मनसुख को। उसने अपने बाबा दिलसुख की सार्गिदी में नाव का काम सीखा था। इसी की आमदनी से उसका घर चलता था। इलाके में मनसुख जैसा हुनरमंद और ईमानदार कोई दूसरा नाविक न था। सुजाता और मीना को अपनी ओर आता देख मनसुख ने नाव एक बार फिर से किनारे पर ला

दी। दोनों की चाल से वह ताड़ गया था कि निश्चित ही दोनों नाव की सवारी करने के ही इरादे से इधर निकली हैं। वह कुछ पूछता इससे पहले ही मीना, सुजाता से बोल पड़ी, नाव की सवारी करेगी? सुजाता को तो मानो बिना मांगे ही मुराद मिल गई थी। उसने कहा क्या तू भी बैठेगी?

मीना पहाड़ी तो थी लेकिन नाव में बैठने से बहुत डरती थी। इस डर का कारण वास्तविक से जादा मनोवैज्ञानिक था, क्योंकि उसके चाचा की मौत नाव से गिरने के कारण ही हुई थी, तो तबसे उनके परिवार की नाव से जैसे दुश्मनी ही चली आ रही थी। मीना के मुख से कोई उत्तर न निकलने पर मनसुख ही बोल उठा, कोई बात नहीं मैडम जी अकेले ही भी सैर करेंगे तो पैसा उतना ही लगेगा। सुजाता पूछ पड़ी कितना। बस १६ किलोमीटर का दो सौ रूपया। इधर सुजाता की उत्सुकता देख, मीना ने उसे हाथ पकड़ नाव में चढ़ा दिया और स्वयं किनारे पर बैठ गई।
चहंदनी रात, साफ आसमान, गंगा का मध्य, चलती नाव पर सवार एक खूबसूरत युवती, नाव चालक अपनी धुन में मस्त चप्पू चलाता हुआ बढ़ चला। कुछ ही देर में वे हर की पौड़ी के नजदीक पहुंच चुके थे।

नाव पानी को चीरते हुए चली जा रही है। मनसुख के चप्पू चलाने का शोर, गंगा की कलरव के साथ मिलकर एक आलौकिक स्वर बन, वातावरण में गूँज रहा है। कल्पना के संसार को यथार्थ में देख वह युवती अपने संसार में डूबी हुई कभी अपने लम्बे बालों के लट को अंगुलियों यों में पिराती तो कभी हाथ नीचे कर गंगा के पानी को उछालती, नीरव गंगा जल से अठखेलियाँ कर रही थी। गंगा की तेज धारा में हिचकोले खाते वक्त सुजाता के शरीर में एक तेज सिहरन उठती। इधर थोड़ी देर एकातं में बैठकर मीना के मन अनेक प्रश्नों की आशंकाओं से भर उठता। दूसरे ही पल वह इन डरावनी आशंकाओं को झटक देती, लेकिन जल्द ही पुनः उसका मन डरावनी चिंताओं से भर जाता। इसी उहापोह में वह चप्पल को हाथों में ले गंगा की धारा की दिशा में भागने लगी। किनारे के काई जमे पत्थरों पर पैर पढ़ते ही वह फिसल जाती पर, दूसरे ही क्षण सुजाता की चिंता में वह उठ खड़ी होकर भागने लगती। उसे इस तरह गिरता पड़ता देख गंगा के दूसरी तरफ एक नाविक ने उसे मुसीबत में समझ, अपनी नाव इस किनारे मीना की तरफ दौड़ा दी। छिटकती चांदनी में मीना उसे देखने की कोशिश कर ही रही थी कि वह फिसल कर गहरे पानी में गिर पड़ी। नाविक ने तेज तेज चप्पू चलाकर नजदीक पहुँचते ही उसी गहरे पानी में छलांग लगा दी। जल्दी ही डूबती मीना के बालों को खींचकर वह अपनी नाव तक पहुंचने में सफल हुआ।

नाव के अंदर गिरते ही जैसे मीना बेहोशी से होश में आके बड़बड़ाने लगी, सुजाता सुजाता, मैंने तूझे क्यों नाव में बिठा दिया? अब तक नाविक कुछ कुछ माजरा समझ गया था, तो उसने मीना से पूछा कितनी देर हुई होगी उनको? मीना ने बताया कि लगभग २० मिनट। तो वह समझ गया कि अब तक वो चंडी घाट पहुंच गये होंगे। उसने मीना को नाव की तली पर आराम से बैठने को कहकर तेज तेज चप्पू चलाना शुरू कर दिया। जल्दी ही उसने मनसुख को पहचान लिया। मनसुख की नाव की ओर इशारा कर उसने मीना से कहा बहन शायद वह रही तुम्हारी मित्र? तलहटी पर बैठी मीना ने आँखें उपर उठाकर देखा तो सुजाता के मुख पर बिखरी खुशी जैसे उसी को धन्यवाद दे रही थी। इतने में नाविक ने अपनी नाव मनसुख की नाव के ठीक बगल में लगा ली।

सुजाता नाव से उतर चुकी थी तो मीना भी जल्दी ही उतर कर उससे लिपट पड़ी। दोनों नाविकों के बीच हुए वार्तालाप से सुजाता पूरा माजरा समझ चुकी थी तो उसके आंसुओं की धारा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। ये यात्रा उन सभी के लिए यादगार बन चुकी थी।

हेमंत चौकियाल,
अगस्त्यमुनि-रुद्रप्रयाग,
उत्तराखंड, 9759981877

शिक्षक दिवस पर व्यंग्य

प्रिय शिष्य

सदा खुशहाल रहो!

मेरे प्रिय शिष्य जब मैं आपको पान ठेला में खड़ा देखता हूं तो ऐसा लगता है मेरे द्वारा दी गई शिक्षा सार्थक हो गई मेरा सीना गर्व से दो गुना हो जाता है जिस प्रकार किसी साधु के सामने कोई भक्त आशीर्वाद के लिये हाथ फैलाये खड़ा रहता है उसी प्रकार तुम पान के लिये हाथ फैलाये खड़े रहते हो,और जैसे ही साधु का आशीर्वाद तुम्हें प्राप्त होता है, तुम प्रसन्न होकर गन्तव्य में चल देते हो, उसी प्रकार जब तुम्हें पान प्राप्त होता है,तुम प्रसन्न हो अपने मुखार बिन्दु पर पीले-पीले दातों से चबाते हो तो मेरी तर्क बुद्धि यह सोचती है कि पान कुसंस्कार है और तुममें कुसंस्कार चबाकर नष्ट करने की क्षमता है, तुम अक्षम नही हो। जब तुम्हें गुटका मुंह में डाले हुए देखता हूं तो तुम्हारे संयम की में दाद देता हूं,तुम वास्तव में इंद्रजीत हो ।अरे कौन इंद्रिय संयमित होगा जो निवाला मुंह में रखे रहे , और बगैर निगले पीक करते हुए निकाल दे वास्तव में तुममें असीम इंद्रिय संयम है।

जब तुम्हें सिगरेट सुलगाने के लिए माचिस की तीली जलाते हुये देखता हूं तो, चिन्ता सी होती है कि कहीं तुम हिन्दुस्तान में आग लगाने तो नही जा रहे हो,पर जब सिगरेट सुलगाकर धुंआ उड़ाते हुये देखता हूँ, तो पर्यावरण प्रदूषण का जो नारा लगाते हैं उनकी मूर्खता पर तरस आता है तुम्हारी गहराईयों को मनन करने की क्षमता तो उनमें है ही नही। जिस प्रकार धुंआ आकाश में वायु में मिलकर विलीन हो जाता है। वायु में समाहित हो जाता है इससे तुम एकता का संदेश देते हो। तुम जब गलियों में इठलाते हुये चलते हो ऐसा लगता है कि आपको बाहरी जगत मिथ्या नजर आता है। जो कुछ है वह मैहूं, मैं ही सत्य हूं। यह देख मैं अति प्रसन्न होता हूँ।जब तुम सीटी बजाते हुये गलियों से निकलते हो,तो मुझे लगता है कि तुम वास्तव में योगी हो । नाद्य योग द्वारा श्वांस रोककर श्वांस को सीटी द्वारा निकालना एक योगी ही कर सकता है।जिसे तुम सड़क चलते ही कर लेते हो। उन योगियों को तो तुमसे विद्या सीखनी चाहिये।श्वांस प्रश्वांस की गति के तुम वास्तव में पारखी हो तुम योगी नही महायोगी हो। धन्य हैं आप और धन्य हूं मैं जिस ऐसे..शिष्य मिले।

मैं मानता हूं आपके घर में सुबह हो या शाम, दोपहर हो या रात पक्षियों के कलरव सी ध्वनि भोर की चहल-पहल सा वातारण हमेशा रहता है।तुम्हारे पिताजी जब चिन्ताहरण (शराब) लेकर आते हैं तो अलग ही माहौल रहता है। वे चिंता से मुक्त अपनी निर्विवाद शैली का प्रयोग करते हैं तो आप मूक बनकर देखते रहते हैं। आपमें जानने करने की क्षमता अतुलनीय है।निश्चत ही आप अपने पिता के पद चिन्हों पर जायेंगे।

दूसरों के बहकावे मैं आकर जब तुम आन्दोलन ,चक्काजाम, लूट, तोड़फोड़ करते हो, तो देश की प्रगति में बाधा की चिंता सी होती है पर यह सोचकर संतोष करना पड़ता है कि एक न एक दिन सभी को मिट्टी में मिलना है। यह शरीर नश्वर है इस नश्वर संसार में हम स्थाई दे भी क्या सकते हैं।समाज के लोग तुम्हें एवं तुम्हारी गतिविधियों को असामाजिक की संज्ञा देने से नही चूकते ।उनकी बातों पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य को लेकर चलने की तुममें क्षमता है, इससे पता चलता है कि तुम कितने आत्मविश्वासी हो।

मुझे याद है जब तुम एक-एक कक्षा में दो-दो, तीन-तीन बार फैल हो जाने के बाद भी लगातार पढ़ाई करने में नहीं चूकते थे,हिम्मत नही हारते थे,उस कक्षा को पास करने में भले ही कुछ साल लगे हों पर तुमने पढ़ाई नही छोड़ी मजबूरन तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें अपने कारोबार में लगाने का फैसला किया,और जब तुम्हें स्कूल से निकालने आये तुम कितने शांत थे। स्कूल के सभी छात्र तुम्हें किन नजरों से देख रहे थे। उनके भावों को तुमसे अधिक और कोई नही समझ सकता आज स्कूल में तुम्हारे जाने के बाद असीम शांति कहां। तुम्हारे जो अनुयायी है वे भी स्कूल की गतिविधियों को तुम्हारे ही तरह लेते हैं।

आशा है आप आने वाली पीढ़ी के लिये कुछ नया कर दिखाने के लिये प्रतिबद्ध हैं। आपकी अनुपम निर्विवाद प्रवृत्ति आपके अनुयायियों के लिये पथ प्रदर्शक रहे। उन्हें अपनी दी हुई विद्या एवं अनुभवों का जायजा-जायका लेने-देने के लिये आप सक्षम है। अपने एवं दूसरों के लिये आप आनंद में परमानंद ढूढने के प्रयासरत हैं आशा है आप सफल होंगे। मेरा यह पत्र आपके एवं आपके अनुयायियों के लिये शायद प्रेरणा दायक हो। आप कुछ नया करें इससे पहले।

तुम्हारा असहाय शिक्षक

डा. रामकुमार चतुर्वेदी
सिवनी, मध्यप्रदेश

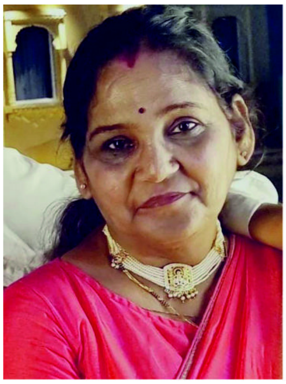

डा राजमती पोखरना सुराना की कहानी
आखिर कब तक

चारों ओर आसमान में काली घटाऐ छा रही थी।लगता था जैसे अभी जोरदार बारिश होगी ,और धरा पर बूँद बरसा उसे रुखे सुखे मन को तृप्त कर देगी।बहुत दिनों से गुम हो गई शीतलता,उसे शीतलता प्रदान करेगी। पर हमेशा की तरह आज भी बादल बिन बरसे निकल गए।

इसी मनःस्थिति से राज गुजर रही थी।मन की वेदना ,पीड़ा जो वो बरसों से झेल रही थी ,उस पीड़ा को बारिश की बूँदों के साथ बहाना चाहती थी ।हर बार मन बादलों की तरह उसे दगा देख जाता था। "आखिर क्यों जी रही हूँ,और किसके लिये जाऊँ, कौन है मेरा यहाँ,"? यही सोच सोचकर दुःखी होती रहती थी । कुछ दिनो पहले की ही तो बात थी। वरूण ने उसको कितनी खरी खोटी सुनाई थी, वो भी अकेले में नही, सबके सामने सुनाई थी । वरूण राज की इसी तरह दूसरो के बहकावे में आकर राज पर मानसिक, शारीरिक अत्याचार करता था कभी राज से आकर नही पूछता कि तूने खाना खाया की नही। बस रात को मेहमान की तरह घर आता और सो जाता।राज अपने दिल की बात उसके साथ साझा करने की कोशिश करती ,उसके मन में जो पीड़ा का अथाह समन्दर हिलोरे मार रहा था,उसे बाहर निकालने का प्रयास करती। पर वहा उसकी कोई सुनने वाला ही था।

राज के मन का अन्तर्द्वन्द्व उसके हालातों का गवाह बन खड़ा था। वो सोचती ये घर छोड़कर ही चली जाऊं। फिर मन में विचार आता कि मै कहाँ जाऊंगी ,माँ बाप तो रहे नही ,यह सोच वापस अपना विचार बदल लेती। सारे दिन अश्को के सैलाब में डूबी रहती। किस्से कहे दिल की पीडा ।उसे लगता लोग उसकी मजाक बनायेंगे, इसलिए खामोशी से सब सहन करती रही ।

आज तो घर वालों ने अपनी सारी सीमाए ही पार कर दी । राज की जेठानी की बहू के बच्चा होने वाला था । घर वालो ने उसको शायद यह सूचना देना जरुरी नही समझा था ।वरुण के पास फोन आया" वरुण भैया शैफाली को अस्पताल ले जाना है ,उसके लेबर पेन शुरू हो गया है ।" फोन आते ही वरूण राज को बताए बिना उनको ले घर से निकल गया।

राज खिड़की मे से वरुण को उन्हें गाड़ी में ले जाते हुए देख रही थी। जब राज को बुखार आता था ,कभी बीमार होती तो घर वाले तो क्या वरुण भी उससे नही पूछता, तुम्हारी तबीयत कैसी है? और इन लोगो के लिए हर वक्त तैयार रहता है ।" आखिर मुझमें ऐसी क्या कमी है ,जो सभी का बर्ताव मेरे साथ रुखा है"- यह सोचती हुई बिस्तर पर आ तकिए के अंदर सिर छिपा जोर जोर से रोने लगी । अरे आंसू बहाने से क्या होगा ,कुछ तो कदम उठाना ही पड़ेगा। यह सोच वह उठकर बाहर गई ,अब जिन्दगी के साथ कोई समझौता नही करुँगी ।अपने हिसाब से जिन्दगी जीने की कोशिश करूंगी। पर हालातों के भंवर में फंसी राज फिर कमजोर पड गई।

तभी वरूण को घर आते देखा ,उसे लगा वो बतायेगा ,उसे की लड़का हुआ कि लड़की? वो तो आया और बच्चे के कपड़े और गुड का पानी लेकर वापस अस्पताल चला गया। तभी दौडी दौड़ी पड़ोसन आई "बोली मुबारक हो आप के यहाँ लड़का हुआ है ।" सुनकर खुशी तो बहुत हुई पर लगा काश घर वालों के मुँह से यह खबर सुनती तो ज्यादा अच्छा लगता।" खैर मै अपेक्षा रखूं तो भी किससे रखूं? जब अपना पति अपनी पत्नी की इज्ज़त नही करता तो घर वाले खाक मेरी इज्ज़त करेंगे।" और राज मनमसोस कर रह गई।

शाम को वरूण जब घर आया तो राज बोली- "वरूण

डिलीवरी का काम तो औरतों का है तुम तो सुबह से ही वहाँ लगे हुए हो और कम से कम भाभी जी का तो एक फोन आता ना मेरे पास की लड़का हुआ है ,तुम घर से ये ये सामान भेज देना। पर यह कहना उन्होंने उचित नही समझा।" तभी झल्लाते हुए वरूण बोला "मै तो तुम दोनो औरतों के बीच में फंस गया हूँ।" दोनों औरतें , तुम्हारी भाभी तुम्हारी औरत कब हो गई। " राज गुस्से में बोली ।

राज का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था । राज ने वरुण को बहुत सुनाया और सुनाती भी क्यों नहीं। उसकी भाभी ने राज की जिन्दगी हराम कर रखी थी ।पति उसका पर उसकी भाभी उसके पति पर अधिकार जमाये बैठी थी ।कब तक आखिर कब तक उधार की जिन्दगी जीने पर राज मजबूर रहती । उसने अब इस एक फैसला लेने की ठान ली।वरूण से बोली- " मुझे अब तुम्हारे साथ नही रहना ।वैसे भी तुम तो मुझे शायद पसंद ही नही करते हो ।सारे दिन अपनी भाभी के कामों में ही व्यस्त रहते हो। मुझसे ज्यादा ध्यान केंद्रित आपका तो उन पर ही रहता है।"

"नहीं-नहीं ऐसा कुछ नही है तुम तो गलत समझ रही हो ," वरूण तपाक से बोला। "मै गलत समझ रही हूं,अरे वरूण मैं सही समझ रही हूँ। मुझे पता है तुम्हारी आदत,मै बस मूक होकर देखती रहूं, और तुम उन पर अपना समय व्यतीत करते रहो। कभी मेरे लिये किया तुम ने।पड़ी रहती हूँ घर के कोने में कभी तुम ने मेरे बारे में,मै क्या चाहती हूँ,सोचा है ,कदापि नही।" राज बोली । यह सुनकर वरूण ने क्रोध की सीमा ही लाँघ दी,पास में पडे पीतल के भारी गुलदस्ते को लेकर राज को मारने दौड़ा। तभी राज का दस साल का बेटा माँ के सामने आ गया।माँ को जैसे तैसे बचा लिया ,गुलदस्ता खिड़की के कांच से इतना तेज टकराया कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। राज और उसका बेटा जोर जोर से रोने लगे। पर उनकी आवाज सुन कर घर से कोई उन्हें बचाने नहीं आया। आज राज के जीवन में एक ऐसा मोड़ आया कि उसने अपनी ज़िन्दगी का सही फैसला लेना उचित समझा। वह वरूण का घर हमेशा के लिए छोड़कर अपने बच्चे के साथ दूसरे शहर की ओर पलायन कर गई। एक नई ज़िन्दगी की शुरुआत करने,नई राह पर चल पडी।जहाँ सिर्फ वो थी ,सिर्फ वो थी ,और उसका अपना अस्तित्व और स्वाभिमान था।

डा राजमती पोखरना सुराना,
भीलवाड़ा राजस्थान
मोबाइल 9759981877

RNI No. UPHIN/2017/74520, ISSN No. 2584-0843, UDYAM-UP-30-0000534

EverGreenMrs india Competition

Beauty of Indian Culture

25 February 2025 ,Gahmar Ghazipur

(Award - Cash Prise 20000Rs/ 15000 Rs/ 10000 Rs Sash, Trophy, Crown,Gift Hamper Certificate, , Photo PortfolioOpportunity to work in short and ad films)

Program
24 December 24 to 25 February 25
21 Selection Rounds & Audition in
21 Cities of 15 States of India
State wise Semi Finals
23 **february to 24 February**
Varanasi, Uttar Pradesh
Election
Mrs. State Runner, Winner ,Queen
Award -
Sash, Trophy, Crown, Certificate, Gift Hamper,
Photo Portfolio, Entry Mrs India Competition final Round

Age Group 20 To 50
Entry Fee
Selection Rounds 1100/Rs Only
Semi Finla Round Reg 1500/-
Final Round Reg 2500/ Only

Registration Open
9289615645
ड्रेस कोड
साड़ी, सूट, लहंगा, गाउन

Director
Akhand Prata Singh
9451647845

More information https://evergreenmrsindia.in

गहमर, गाजीपुर, उ0प्र0 से प्रकाशित
त्रैमासिक पत्रिका
साहित्य सरोज
RNI No. UPHIN/2017/74520, ISSN *2587-0843
9451647845,मेल sarojsahitya55@gmail.com
www.sahityasaroj.com.

अपनी कविता, लेख मनोरंजक/जासूसी व अन्य कहानियाँ संस्मरण, यात्रावृतांत शोध-पत्र प्रकाशित करने के हेतु भेजें।

शार्ट-फिल्म अभिनय, मॉडलिंग, एंकरिंग करने या प्रशिक्षण के इच्छुक काल करें

अखंड प्रताप सिंह
"अखंड गहमरी"
प्रकाशक साहित्य सरोज

ग्रामीण क्षेत्र में बाल व महिला उत्थान, रोजगार व प्रतिभा प्रदर्शन के लिए हम बचनबद्ध हैं।

सुनीता मुखर्जी की कहानी
कीमत

शोभना मेरा ड्रेस कहाँ है अभी तक निकाला क्यों नहीं? मुझे ऑफिस जाने के लिए देर हो रही है रोहन जोर से आवाज दे रहा था। जल्दी करो......। शोभना रसोई से दौड़ते-दौड़ते आई और ड्रेस, टाई, रुमाल, और मैचिंग कैप सब निकाल कर दे दिया। डाइनिंग टेबल पर नाश्ता लगा दिया है, आप जल्दी से नाश्ता कर लीजिए... तब तक पानी की बोतल, ग्लूकोस और दोपहर का खाना सब पैक कर बैग तैयार कर दे रही हूँ।

अरे! आपने चाय नहीं पी? शोभना बोली।

नहीं! अभी चाय पीने का समय नहीं है। शोभना ने जल्दी से चाय कटोरी में डाल- डाल कर ठंडा करके देने लगी।

ओफ्फ्हो!! आज तुम्हारे कारण फिर लेट हो गया?

तुम भी कुछ काम कर लिया करो शोभना मुस्कुराते हुए बोली।

तुम अच्छे से जानती हो कि मुझे घर के काम करने की आदत नहीं है। बाहर तो काम करता ही हूँ और अब घर में भी....

तुम नानू को स्कूल छोड़ और ले आती हो, थोड़ा बहुत घर का काम है। मेरे ऑफिस जाने के बाद तो सारा दिन तुम फ्री रहती हो।

शोभना सुबह-सुबह अपना मूड खराब नहीं करना चाहती थी इसलिए कुछ नहीं बोली और मुस्कुराते हुए रोहन को विदा किया।

रोहन के सहकर्मी एक बार जरूर कहते... वाह!! तुम्हारा ड्रेसिंग सेंस बहुत अच्छा हो गया है विवाह के बाद भाभी ने एकदम बदल दिया है। रोहन की एक-एक चीज का ख्याल शोभना रखती थी। यहां तक की रुमाल भी ड्रेस के साथ मैचिंग का देती थी।

बड़े शहर में कामवाली बाई मिलना बहुत मुश्किल होता है अगर मिल भी जाए तो उसकी पगार बहुत ज्यादा होती है इसलिए शोभना घर के सभी काम स्वयं ही करती थी। कहती जो बाई को पगार देंगे वह पैसा किसी और काम आएगा? जो अधिकतर मध्यमवर्गी महिलाओं की सोच होती है।

बाथरूम गई तो देखा कच्छा और तौलिया सब गीले पड़े हैं ओफ्फ्हो!! इतना भी नहीं कर सकते हैं? जल्दी-जल्दी घर का काम निबटाकर नानू को स्कूल से ले आई।

सब काम निपटाकर उसने हाथ में मोबाइल लिया ही था कि रोहन का व्हाट्सएप मैसेज देखकर रुक गई, लिख रहे हैं..... सारा दिन ऑनलाइन रहती हो और कहती हो कि घर में काम बहुत है। शोभना ने गुस्से में तमतमा कर मोबाइल रख दिया।आखिर क्या चाहते हैं रोहन?

खाना खाकर नानू भी सो कर उठ गया था उसे होमवर्क करवा कर शाम का नाश्ता तैयार करने लगी।

दफ्तर से रोहन आए और सोफा पर पसर गए। बोले काम करते-करते बहुत थक गया हूँ। शोभना ने चाय दी और रात के खाने की तैयारी करने लगी।

रोहन ने शोभना की प्रशंसा में कभी एक शब्द भी नहीं कहा, यदि काम करते-करते कुछ भी काम बिगड़ जाए तो रोहन के मुंह से तुरंत निकलता "बहुत बेवकूफ औरत हो तुम।" घर हो या बाहर, सरेआम बेइज्जत करने में वह कभी नहीं चूकते।

रोहन का यह व्यवहार शोभना को बहुत आहत पहुंचाता, लेकिन वह चुपचाप सहन कर जाती। शुरुआत में एक दो बार विरोध करने की कोशिश की.... तो रोहन ने बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा कर दिया। इसलिए ज्यादातर वह चुप हो जाती है।

पत्नी के ऊपर रौब चलाने में ही वह अपने आप को संपूर्ण मानता था।

वही रोहन के सभी दोस्त कहते.... यार!! तेरी जिंदगी तो जन्नत है। शोभना जैसी पत्नी तुम्हारी जिंदगी में बहार लेकर आई है। रोहन तपाक से बोलता....घर में काम ही क्या है? इतना भी नहीं करेगी तो समय कैसे कटेगा।

एक दिन शोभना नानू को स्कूल से ला रही थी तभी एक गाड़ी ने उसे धक्का मारा। वह नानू को बचाने के चक्कर में खुद गाड़ी के नीचे आ गई। सिर में ज्यादा चोट लगने के कारण लगातार खून निकल रहा था। अस्पताल पहुंचने में भी देरी हुई जिस कारण शोभना १५- १६ घंटे जीवित रहने के पश्चात उसने दुनिया छोड़ दी।

रोहन कुछ समझ नहीं पा रहा था कभी नानू कभी शोभना के पार्थिव शरीर को देख रहा था। शोभना के बिना एक कदम भी नहीं चल सकता था। कुछ सोच नहीं पा रहा था बस दहाड़े मार- मार कर रोने लगा। बार-बार कह रहा था कि मैं नानू को लेकर कैसे रह पाऊंगा।

क्रिया कर्म होने के बाद नानू बोला पापा भूख लगी है। वह कुछ सोचते हुए किचन में गया जहां उसे कहां क्या है कुछ मालूम नहीं और वापस आ गया।नानू ने फिर कहा पापा मुझे भूख लगी है, कुछ खाने को दो।

उसके अनवरत आंसू बहे जा रहे थे उसे एक-एक पल काटना मुश्किल हो रहा था क्योंकि वह पूरी तरह से शोभना पर निर्भर था। शोभना के जीवित रहते उसकी कीमत रोहन कभी नहीं समझ पाया, लेकिन अब कदम- कदम पर शोभना की हर बात सता रही थी।

छः महीने के बाद घर वालों ने रोहन का दूसरा विवाह रेणुका के साथ कर दिया। रेणुका अपनी मर्जी की मालकिन थी। सुबह ८ बजे सोकर उठती। सासू मां थी। वह खाना बना रही थी। कुछ दिन रहने के पश्चात वह वापस गांव चली गई।

एक दिन रोहन ने रेणुका से कहा... .. यदि तुम इतनी देर से सो कर उठोगी तो कैसे घर संभाल पाओगी.... मुझे ऑफिस और नानू को स्कूल जाना है इतनी देर तक सोने से कैसे चलेगा। रेणुका ने कहा आपको ऑफिस जाना है तो अपना खाना स्वयं बनाकर ले जाइए। यह सब मेरे बस की बात नहीं है कि मैं सुबह-सुबह खाना बनाऊँ और इतना काम का बोझ लादे फिरूं मुझसे नहीं होगा। एक सलाह देती हूं किसी खाना बनाने वाली को रख लो जो समय पर खाना बना कर तुम्हें दे सके। और हां रही बात नानू की... . "वह तुम्हारा बच्चा है तुम समझो उसे कैसे पालन-पोषण करना है।" मेरी मानो तो उसे हास्टल में ही रख दो।

"रोहन के काटो तो खून नहीं"... उसे रेणुका से ऐसी उम्मीद नहीं थी। उसे शोभना की एक-एक बात याद आ रही थी ....सचमुच मेरी शोभना गृह लक्ष्मी थी उसके जीते जी मैंने उसकी कीमत कभी नहीं समझ पायी। मैं इसी लायक हूं मुझे सजा मिलनी चाहिए। सचमुच शोभना मैं तुम्हारे बिना अधूरा हूँ।

सुनीता मुखर्जी "श्रुति"
हल्दिया पूर्व मेदिनीपुर
पश्चिम बंगाल
9013246508

एवरग्रीन न्यूट्रिशन प्वाइंट
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645

यदि आप अधिक वज़न, कम वज़न, थकान, अनिद्रा,खरार्टे, सूगर, हाई वीपी, थाईराइड, जोड़ो में दर्द से परेशान है तो आयें

शालिनी की कहानी
मजबूर

"कतनी दफा तुमसे कहेन कि बरसाती जूता लाए देओ मुला तुम का तो......" संतराम ने अपने बेटे मनीराम को ताना मारने के अंदाज में कहा तो मनी बिफर पड़ा, "हां हां तुम तो जैसे हम का खजाना दई दिए हो, कहां से लाई जूता। धान की लगउनी मा जउन रुपया मिले रहे वह तो सार बाल्दा की छप्पर छवाए मा लग गए ।" संतराम जानता था कि मनी दिन रात की हाड़- तोड़ मेहनत के बाद भी इतना ही कर पाता है कि दो जून की रोटी मिल जाती, कभी-कभी तो उसके भी लाले पड़ जाते है।

दो बरस पहले ऐसी स्थिति नहीं थी, खेती में इतना धान तो उग ही जाता था कि साल भर का इंतजाम हो जाता था और थोड़ा बहुत बचत भी हो जाती थी। संतराम को जब से लकवा मार गया, खेती किसानी तो ठप हो ही गई खेतों से भी हाथ धोना पड़ा । जब तक लाजो जीवित रही उसने खेत नहीं बिकने दिए ।

वह हमेशा यही कहा करती कि, "अरे ! ई खेत हमार अन्नदाता है हमार भगवान हैं ।" अपने छुटके को बचाने में उसने अपना एकमात्र गहना अपनी हंसुली भी बेच दी थी । मगर खेत ना बिकने दिया। संतराम ने जब लाजो से कहा, "हम तुम्हरे लिए कबहु कुछ ना कर पाए ऊपर से या गहना जेवर यहू हम ले लिएन ।" लाजो ने उत्तर दिया, "अरे का बात करत हो, हमार लड़कवा हमार जेवर गहना है । ऊपर वाला हमका ई दुई अनमोल रतन दिहिस है । हमार छुटकऊ ठीक हो जइहै तो तुम हमका हंसुली के साथ-साथ पाजेब बनवाए दिहैओ ।" मनीराम का एक पांव पहले से ही पोलियो ग्रस्त था । अब छुटकऊ को भी डॉक्टर ने बताया था कि इस के दिल में छेद है , अगर ऑपरेशन समय पर नहीं हुआ तो उसे बचाना मुश्किल हो जाएगा। कहते हैं ना कि गरीबी सबसे बड़ी बीमारी है । छुटकऊ दिल की बीमारी से तो बच जाता मगर गरीबी से उसे कौन बचा सकता था ? गरीब इंसान के लिए इलाज करवाना आसान नहीं होता।

अभी छुटकऊ की मौत से उबर भी न पाए थे कि लाजो को पीलिया हो गया। बेटे का गम, गरीबी और बीमारी ने लाजो की भी जान ले ली। घर में लकवा- ग्रस्त संतराम और मनीराम इस गरीबी और बेचारगी से लड़ने के लिए रह गए। खेत के नाम पर बस एक नहर के पास वाला छोटा सा टुकड़ा ही बचा रह गया था। कहने को नहर के पास था, मगर सिंचाई के लिए बारिश की बाट जोहने के अलावा और कोई रास्ता भी ना था। नहर ठाकुर की थी और बिना पैसा कौड़ी लिए ठाकुर एक बूंद पानी भी ना देता । जैसे-तैसे बस इसी जमीन के सहारे दिन कट रहे थे। दूसरे किसानों की तरह दोनों बाप बेटे को ताड़ी या ठर्रा पीने की लत नहीं थी इसलिए भूखों मरने की नौबत अभी नहीं आई थी।

हरिया कई दफा मनी को ठेके पर ले जाने की कोशिश कर चुका था स मगर मनी को अपनी अम्मा की सौगंध याद आ जाती, "बिटवा ई जहर का कभी हाथ ना लगाना। ई आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है।" कभी-कभी तो उसका मन करता कि जब अम्मा ही नहीं रही तो उनकी सौगंध का क्या ? मगर बापू की लाचारी और बेचारगी देखकर उसके कदम वहीं रुक जाते थे । हरिया रात को जब रोज पीकर घर में बमकता तो उसे बहुत गुस्सा भी आता और तरस भी । हरिया भी क्या करें ? नौ लोगों का परिवार और कमाने वाले केवल हरिया और सुरमा ऊपर से बीमारी अजारी अलग से स जब काम मिल जाता तो मजदूरी के पैसे से किसी तरह दिन कट जाते थे, मगर जब काम ना मिलता तो कभी-कभी भूखे रहने की भी नौबत आ जाती थी।

इस बरस मनीराम ने दूसरों के खेत में कटाई का काम करके सात सौ रुपए जोड़ लिए थे । उसे यकीन था कि इस बार बापू के बरसाती जूते और अपने लिए एक कंबल ले लेगा । जिससे सर्दी में रात भर अलाव के सामने नहीं बैठना पड़ेगा ।

पिछले बरस तो फसल में कीट-पतंगे ऐसे लगे कि खड़ी फसल बर्बाद हो गई । बचत तो दूर, दो जून का खाना भी बड़ी मुश्किल से मिलता ।रोटी बना कर रख दी थी । लहसुन की चटनी पीस कर बापू को थाली पकड़ा दी । मनी लोटे में पानी रखकर अपने लिए भी थाली ले आया। बापू खा कर सो गया। आज फिर मनीराम दर्द से करवट बदल रहा था। जब भी उसे ज्यादा काम करना पड़ता उसके पैर का दर्द उसे रात भर सोने ना देता था । अचानक वह कुछ आवाज सुन कर बाहर निकला। उसे लगा कि हरिया के घर कुछ हुआ है।

चीख-पुकार सुनकर मनी हरिया के घर की तरफ भागा । एक तरफ सुरमा के मुंह से झाग निकल रहा था, हाथ पैर अकड़े हुए थे और सांस धोकनी की तरह चल रही थी, दूसरी तरफ हरिया की। सुरमा को एक उल्टी आई और उसके प्राण पखेरू उड़ गए स चीख की आवाजे आसमान को चीर रही थी । उसने बढ़कर हरिया की नब्ज देखी उसकी नब्ज अभी चल रही थी।

अस्पताल में बहुत भीड़ थी। जहरीली शराब पीने के कारण बहुत से लोगों को अस्पताल लाया गया था ।मनीराम हरिया का कभी हाथ रगड़ता कभी पैर । डॉक्टर ने पर्ची उसके हाथ में पकड़ाते हुए कहा अगर यह दवाईयां तुरंत ना मिली तो हरिया का बचना नामुमकिन है ।मनीराम भाग कर घर आया स गेहूं के कनस्टर से रुपया निकल कर अस्पताल पहुंचा। दवाईयां देकर मनीराम बाहर आ गया । उसके सामने बापू का चेहरा घूम रहा था स बार-बार यही शब्द कानों में गूंज रहे थे, कतनी दफा तुमसे कहेन कि बरसाती जूता लाए देओ मुला तुमका तो.............

शालिनी राय निगम
कानपुर, उत्तर प्रदेश
9335838219

सुमन लता की कहानी
मातृत्व की जीत

आज सुबह से ही घर के सभी लोग मन ही मन किसी चिंता में डूबे हुए चुपचाप अपने कार्यों में व्यस्त थे। बस घर भर का लाडला सोलह वर्षीय अमित ही इस बात से बेखबर था। उसने दसवीं की परीक्षा उत्कृष्ट अंकों के साथ उत्तीर्ण की थी। इस कारण विद्यालय प्रबंधन ने उसका फोटो अन्य होनहार विद्यार्थियों के साथ शहर में जगह-जगह होर्डिंग्स पर लगा रखा था।

अमित के दादा-दादी और मम्मी-पापा को उसकी उपलब्धि पर बहुत गर्व था। उसके दोनों बड़े भाई सुश्रुत और सौरभ भी उसे बहुत प्यार करते थे।

आज अमित अपनी अंक तालिका लेने के लिए विद्यालय गया हुआ था और यही सबकी चिंता का कारण था। अंक तालिका के साथ ही खुलने वाले राज और अमित की संभावित प्रतिक्रिया सोच सोच कर घरवाले आशंकित थे।क्या पता अमित सच्चाई जानकर सभी से नाराज हो जाये? कहीं अवसाद में आ गया तो?

क्या पता घर छोड़ने को आमादा हो जाए? कहीं विद्यालय से विमुख हो गया तो? ये प्रश्न भावी की आशंका से सभी के मन को मथे जा रहे थे।

तभी अमित अपनी अंक तालिका लिए लौट आया। दादी ही सबसे पहले सामने पड़ीं ।मन ही मन डरते हुए उन्होंने अमित से कहा, "आ बेटा, थक गया होगा।गर्मी भी तो बहुत है। मैंने तेरे लिए लस्सी बना रखी है, पी ले।"

"अरे दादी, लस्सी तो पी लूँगा ,लेकिन पहले मेरी अंक तालिका तो देखो। बोर्ड परीक्षा वाले देखो कितनी गलतियां करते हैं।पापा और मम्मी का नाम ही गलत लिख दिया। पहले तो ये नाम ठीक करवाना होगा।" बैचेनी से कहते हुए अमित दादी को अपने अंक तालिका दिखाने लगा।

दादी अंक तालिका हाथ में लेकर देखने लगीं।"बता, क्या गलत लिखा है?"

"देखो दादी, माँ का नाम 'सरिता ' , पिता का नाम 'सोमेश ' लिख दिया है। बोर्ड की अंक तालिका में भला ऐसी गलतियाँ होती हैं?

दादी मन ही मन स्थिति का सामना करने का साहस बटोर कर धीरे से बोलीं, "सही लिखा है बेटा।"

" दादी आप ठीक तो हो? क्या बोल रही हो? मेरी मम्मी का नाम सरोज और पापा का नाम सुनील है। क्या आप भूल गईं?"

"तेरी मम्मी का नाम सरिता और पापा का नाम सोमेश ही है।" दादी का गंभीर स्वर गहरी खाई से आता प्रतीत हुआ।

"क्या कह रही हो दादी?" अविश्वास और झुंझलाहट से भरकर अमित बोल उठा।

"जब तू नौ माह का था तभी मेरा छोटा बेटा सोमेश और बहू सरिता एक्सीडेंट में मारे गए थे। मैं और तेरे दादा तब सदमे मे आ गये थे। तुझ अबोध को देखकर हमारा रुदन फूट पड़ता था। तब सरोज ने माँ बनकर अपने आँचल की छाँव तुम्हें दी। तब हम तुम्हें लेकर इस दूरस्थ शहर में जहां सुनील की नौकरी थी आ गये थे।

जब पहली बार स्कूल में तुम्हारा नाम लिखवाना था तब माता-पिता के नाम पर हम सबने बहुत चिंतन किया था।

हम सबको यह चिंता थी कि जैसे ही तुम समझने लगोगे और सोमेश -सरिता (पिता-माता) के बारे में पूछोगे हम तुम्हें क्या बताएंगे ? यह कि तुम्हारे माता-पिता नहीं है ?तुम्हारा कोमल दिल यह जानकर कहीं टूट न जाए। हम चाहते थे कि तुम्हारे बचपन को बस खुशियां ही मिलें,गम की परछाई भी तुम्हें छू न पाये। तुमने होश सम्हालते ही

सुनील और सरोज को पिता और माँ के रूप में जाना था । हम सब चाहते थे कि सुनील तुम्हें कानूनन गोद ले ले। तब प्रवेश फॉर्म में भी इन्हीं का नाम लिखा जा सकेगा लेकिन इसमें भी एक बड़ी समस्या थी। सुनील सरकारी नौकरी में था। उसकी दोनों संतानों की जानकारी पहले ही विभाग में दी हुई थी। तीसरी संतान के रूप में तुम्हारी जानकारी विभाग को मिल जाती तो सुनील को नौकरी मे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता। वैसे ही उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ नहीं थी। जैसे तैसे घर का खर्च पूरा पड़ता था। सुनील की नौकरी पर किसी प्रकार की मुसीबत हम सबके जीवन यापन का संकट बन सकता था। स्थिति ऐसी थी कि इधर पड़ो तो कुँआ और उधर पड़ो तो खाई।

तब हम सबने मिलकर यह समाधान निकाला कि विद्यालय में तुम्हारे पिता माता का नाम सोमेश व सरिता ही लिखवाया जावे।लेकिन विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी को परिस्थिति से अवगत करवा कर अनुरोध किया कि विद्यार्थी को देने वाले परीक्षा परिणाम में सुनील व सरोज का नाम अंकित कर दिया जावे। कैसे भी करके प्रधानाचार्य जी ने अपना वचन निरंतर निभाया।

लेकिन दसवीं कक्षा में बोर्ड परीक्षाओं में यह व्यवस्था संभव नहीं थी। वैसे भी तुम्हारे बड़े होने पर तुम्हें वास्तविकता बतानी ही थी । सच्चाई यही है मेरे बच्चे,सरोज तेरी यशोदा माँ है और सुनील तेरा नंदराय पिता है।उनके लिये तो तू सुश्रुत और सौरभ से भी बढ़कर है ,बेटा। ”

दादी का यादों के भँवर में डूबता उतराता गंभीर स्वर एकाएक वात्सल्य से भर गया । दादी के चुप होते ही वातावरण में एकाएक गहन शांति छा गयी। दादी अमित के चेहरे की और देख उसके मनोभाव पढ़ने लगी।

अमित के मुख पर विभिन्न गहरे विचारों का आवागमन लगा हुआ था । दृष्टि एकटक दूर कहीं टिकी हुई थी, फिर भी वह कहीं देखता हुआ न दिखता था जैसे गहन चिंतन में लीन हो। दादी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा,

”अमित, तू ठीक तो है ना?”

हड़बड़ाते हुए अमित सचेत हुआ फिर बोला, ” ”दादी मैं ठीक हूँ । माँ कहाँ हैं ?”

”अंदर कमरे में ही होगी, जा मिल ले।”

कमरे में दरवाजे की ओट से सारा वार्तालाप सुनते हुए सरोज आगत की आशंका से काँप उठी।

”माँ......कहाँ हो..?” कहते हुए अमित कमरे की ओर बढा। अमित की पुकार सुनकर सरोज धड़कते दिल से दरवाजे की ओट से बाहर निकल आई ।

”माँ....” कहते हुए अमित सरोज के गले से चिपक गया।

सरोज ने अमित को अपनी बाहों में कस लिया जैसे खोया हुआ बेटा फिर से पा लिया हो।

सुमन लता शर्मा
बूंदी ,राजस्थान
9414000102

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग
विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं
अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण
के लिए तत्काल मिलें।

रमा भाटी की कहानी

कन्यादान

लवलीन एक बहुत सुलझी हुई लड़की थी। पढ़ाई में भी बहुत होशियार थी। अपने परिवार में अकेली बेटी थी इसीलिए सब की लाड़ली प्यार से सब उसे लवली कहते थे। लवली ने मेहनत कर पी.एच.डी कर ली और जल्दी ही उसे कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी मिल गई। घर में सब बहुत खुश थे। जिंदगी हंसी खुशी बीत रही थी लवली के लिए जल्दी ही शादी के रिश्ते आने लगे, लेकिन वह नौकरी करते हुए आगे और पढ़ना चाहती थी। परिवार ने उसकी इस बात की कद्र करी। लवली ने समय निकाल मास्टर्स की पढ़ाई शुरू कर दी लेकिन किस्मत को शायद कुछ और ही मंजूर था। अचानक उसके पिता जी की तबीयत खराब रहने लगी टेस्ट कराने पर पता चला उन्हें ब्लड कैंसर है।

परिवार में चिंता की लहर दौड़ गई। डॉ ने कहा लास्ट स्टेज है अब इसका कोई इलाज नहीं, आप इन्हें घर पर ही रखें और देखभाल करें जितना समय वह आराम से निकाल सकें। उसके पापा की देखभाल के साथ ही सभी लवली की शादी पर जोर देने लगे। उसके पापा ज्यादा चिंता करते कि कल को मुझे कुछ हो गया तो मेरी बेटी का क्या होगा। समय निकलता जा रहा था, उन्होंने लवली को शादी करने पर जोर दिया वह परिवार की परेशानियों को अच्छी तरह समझ रही थी, इसलिए ना चाहते हुए भी उसने हां कर दी, मां उसे गले लगा रोने लगी। जल्दी ही उसके लिए रिश्ते देखे जाने लगे और अच्छा रिश्ता मिलने पर बात आगे बढ़ी कि लड़का स्मार्ट है अच्छी कंपनी में काम करता है घर परिवार भी अच्छा है। लड़के वाले बोले की बहू नौकरी करना चाहेगी या आगे पढ़ना चाहेगी तो कर सकती है हमें कोई दिक्कत नहीं। लवली के पापा की तबीयत दिन पर दिन ढीली होती जा रही थी, इसीलिए उन्होंने ज्यादा छानबीन करे बिना उसकी शादी पक्की कर दी।

कुछ ही दिनों में शादी भी अच्छे से हो गई और लवली ससुराल चली गई, उसका ससुराल काफी दूर आठ-दस घंटे का रास्ता था। वो चाह कर भी अपने पीहर जल्दी-जल्दी नहीं आ सकती थी।

लवली को कुछ दिन तो सब ठीक लगा पर कई बातें वह समझ नहीं पा रही थी, लेकिन महसूस कर रही थी। सोचा नई जगह है नया परिवार धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। लेकिन लवली सोचने पर मजबूर हो गई कि जब से उसकी शादी हुई है उसका पति उसके नजदीक ही नहीं आता कोई ना कोई बहाना बना कर सो जाता। मन ही मन बहुत दुखी रहने लगी और सोचती कि ऐसी क्या बात है की हमारी नई-नई शादी हुई है और विवेक है कि ना तो मुझे समय देता है ना ही हमारे संबंध बने हैं आखिर क्या बात है ऐसा क्यों? अगर वह उससे बात करना चाहती है इस बारे में तो विवेक टाल जाता है। उधर उसके पापा की तबीयत बिगड़ती जा रही थी। इसलिए वह अपने पीहर में भी अपना दुख नहीं बांट सकती थी। कुछ दिनों से लवली महसूस कर रही थी उसके पति विवेक का एक दोस्त हर तीसरे-चौथे दिन आता है तब विवेक बड़ा खुश दिखाई देता है दोनों दोस्त दो-दो घंटे भी कमरे में अकेले रहते हैं।

उसे बड़ा अजीब लगता। धीरे धीरे उसे उनके रिश्तों के बारे में समझ आने लगी। क्योंकि ऐसी बातें और किस्से वह पढ़ और सुन चुकी थी जैसा कि आजकल चलन में है। लवली मन ही मन परेशान होने लगी अब तो परेशानी चेहरे पर भी झलकने लगी थी। वैसे लवली की सास भी समझदार और सुलझी हुई औरत थी। उन्होंने एक दो बार लवली से पूछा की, क्या बात है बेटी खुश तो हो ना उसने कहा हाँ माँ। लेकिन लवली ने जल्दी ही विवेक और उसके दोस्त के रिश्ते को

महसूस किया वह बहुत ही धैर्यवान थी उसने काफी सोचा और एक दिन अपनी सास के पास जाकर आराम से सारी बात बताई।

वो सब सुनकर विवेक की मां अचंभित रह गईं और अपने बेटे पर गुस्सा भी बहुत आया। उन्होंने लवली को प्यार से गले लगाया और बड़ा दुख व्यक्त किया और कहा बेटी हमें इस बारे में बिल्कुल भी इल्म नहीं था, नहीं तो हम तुम्हारी जिंदगी कभी बर्बाद ना होने देते। लवली की सास के माथे पर चिंता की लकीरें थी, उन्होंने कहा बेटी तुम फिक्र ना करो अब हमें ही कोई ठोस कदम उठाना पड़ेगा तुम्हारी जिंदगी संवारने के लिए और लवली को गले लगा लिया।

रात को उन्होंने विवेक के पापा को जब सारी बात बताई तो उन्हें बहुत बुरा लगा और गुस्सा आया कि विवेक ने इतनी बड़ी बात हमसे छुपाई, अगर पहले बता दिया होता तो हम ये अनर्थ हरगिज़ ना होने देते। उन्होंने अपने बेटे को काफी समझाने कि कोशिश की उसे उसकी जिंदगी का वास्ता दिया और बोले अगर तुम्हारे में इतनी बड़ी कमी थी तो हमें पहले क्यों नहीं बताया, तुमने शादी के लिए हां क्यों भरी क्यों उस बहु की जिंदगी खराब कर दी,लेकिन विवेक किसी तरह भी मानने को तैयार नहीं हुआ।

तब उन्होंने बहुत सोच विचार कर लवली से बात करी बोले बेटा हमें विवेक ने तुम्हारे आगे शर्मसार कर दिया है उसे भी समझाना मुश्किल हो रहा था क्योंकि उसके लिए कोई भी फैसला लेना बहुत मुश्किल था। अचानक दो दिन बाद लवली के पीहर से खबर आई उसके पापा नहीं रहे तो वो बहुत रोई लेकिन उसने बहुत समझदारी से काम लिया। उसने अपनी मां को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया क्योंकि वो पहले ही बहुत दुखी थीं। लवली को उसके सास-ससुर ने बड़े प्यार से समझाया अब तुम हमारी बहु नहीं बेटी हो। यह हमारा फर्ज है कि हम तुम्हें वह सब खुशियां दें जिसकी तुम असली हकदार हो। बेटी तुम चाहो तो नौकरी कर सकती हो, आगे पढ़ सकती हो और जब भी तुम अपने को ठीक महसूस करो और तुम्हारा मन माने तो हमें जरूर और जल्दी बताना। इस बार अच्छे से छानबीन करके हम तुम्हारा कन्यादान करेंगे की तुम्हारी आगे की जिंदगी खुशियों भरी हो। लवली ये सुनकर अपने सास-ससुर को मां-पापा कह कर उनके गले लग गई।

रमा भाटी

जयपुर

राजस्थान

9928611164

माँ कामाख्या सदैव आपकी मनोकामना पूर्ण करें और आप व आपके परिवार को स्वस्थ एवं सुखी रखें।

एवरग्रीन न्यूट्रिशन प्वाइंट

दूषित खान-पान व अनियमित दिनचर्या के कारण बढ़ता है वजन

और बढ़ा वजन

थकान,अनिद्रा

सूगर,

हाई बीपी,

थाईराइड,

जोड़ो में दर्द,

दिल की बिमारी

सहित कई बिमारियों का कारण है।

यदि आज आप के पास अपने शरीर के लिए समय नहीं है तो कल आपका शरीर बीमारियों से जूझते नज़र आयेगा।

वजन कम कीजिए सुरक्षित और आसान तरीके से बिना किसी दवा व साइट इफेक्ट के न्यूट्रिशन एवं योगा के द्वारा

सम्पर्क करें और निःशुल्क फिटनेस जाँच करायें

फिटनेस कोच- श्रीमती ममता सिंह

विकास भवन, स्टेशन रोड,गहमर,गाजीपुर, मोबाइल 7985798456

गहमर, गाजीपुर, उ0प्र0 से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य सरोज

RNI No. UPHIN/2017/74520, ISSN *2587-0843

9451647845,मेल sarojsahitya55@gmail.com

www.sahityasaroj.com.

अपनी कविता, लेख मनोरंजक/जासूसी व अन्य कहानियाँ संस्मरण, यात्रावृतांत शोध-पत्र प्रकाशित करने के हेतु भेजें।

शार्ट-फिल्म अभिनय, मॉडलिंग, एंकरिंग करने या प्रशिक्षण के इच्छुक काल करें

अखंड प्रताप सिंह

"अखंड गहमरी"

प्रकाशक साहित्य सरोज

ग्रामीण क्षेत्र में बाल व महिला उत्थान, रोजगार व प्रतिभा प्रदर्शन के लिए हम बचनबद्ध हैं।

क्रांतिकारी लाला दूनीचंद्र

**"धन्य हैं वो वीर जिन्होंने सर्वस्व देश पर वार दिया
माँ भारती का कर्ज़ उन्होंने सहर्ष फर्ज से उतार दिया"**

देश को गुलामी के बंधन से मुक्त कराने के लिए असंख्य देशभक्त अपनी जान की बाजी लगाने से भी पीछे नहीं हटे। जिन्हें आज भी याद करते हुए हम उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। किंतु कुछ ऐसे भी गुमनाम क्रांतिकारी हैं जिनका जिक्र इतिहास के पन्नों पर अंकित नहीं है। ऐसे ही क्रांतिकारियों की सूची में लाला दूनीचंद का नाम भी आता है। धन्य है पंजाब प्रांत की वो माटी जिसमें दूनीचंद जैसे अनगिनत देश भक्त यौद्धाओं ने जन्म लिया।

लाला दूनीचंद जी का जन्म अंबाला की पटियाला रियासत के गांव मानकपुरा में सन् १८७३ में हुआ था। इनके पिता का नाम तेलू राम था। अपनी प्राथमिक शिक्षा यहीं से करने के पश्चात वे मैट्रिक की परीक्षा के लिए पटियाला चले गए। उनकी उच्च शिक्षा पटियाला और लाहौर के क्रिश्चियन कॉलेज में हुई। वकालत की पढ़ाई करने के उपरांत उन्होंने अंबाला में वकालत करना प्रारंभ कर दिया।

सन् १९०७ में जब देश में उपनिवेशीकरण विधेयक लागू हुआ तो इससे पंजाब के किसानों को अत्यंत गरीबी का सामना करना पड़ा। किसान नेताओं ने लाला लाजपत राय और अजीत सिंह के नेतृत्व में इसके विरोध में पंजाब में आंदोलन आरंभ कर दिया। इस समय लाला लाजपत राय कांग्रेस के विभाजन के बाद उससे अलग हो चुके थे ।लाला हरदयाल के साथ वे इस आंदोलन में कूद पड़े। ऐसे में लाला दूनीचंद से भी किसानों की दयनीय स्थिति देखी ना गई और वे अपनी वकालत को छोड़ कर इस आंदोलन में सक्रिय तौर पर शामिल हो गए।

९ मई १९०७ को सरकार ने लाला लाजपत राय और अजीत सिंह को देश से निर्वासित कर दिया गया। ऐसे में लाला दूनीचंद किसानों के साथ डटे रहे । १९२० के असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने अम्बाला तथा पटियाला के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया और वहाँ जनसभाओं में लोगों से नशीले पदार्थों का उपयोग न करने के लिए अपील की और इनका बहिष्कार करने के लिए कहा । ऐसे में ब्रिटिश सरकार तिलमिला उठी परिणामस्वरूप उन्हें ६ महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाते हुए डेरा गाजी खान जेल में भेज दिया गया ।

२३ जुलाई १९२३ को जेल से रिहा होने के बाद वे पुनः देश सेवा में जुट गए। सन् १९३० में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हुआ तो वे दूनीचंद जी भी इसमें शामिल हो गए। उन्होंने लोगों को आंदोलन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया । इस बार उन्हें पुनः कांग्रेस कमेटी के सदस्यों के साथ कारावास की सजा सुना दी गई। जेल से रिहा होने के बाद वे स्वराज पार्टी का गठन होने के बाद उसमें सम्मिलित हो गए और उसके टिकट पर चुनाव के बाद केन्द्रीय असेंबली के सदस्य चुने गए । बाद में वे पंजाब प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में चयनित हुए । सन् १९३७ के निर्वाचन के बाद उन्होंने पंजाब असेम्बली के सदस्य के रुप में भी कार्य किया।

लाला दूनीचंद न केवल सच्चे देश भक्त थे अपितु एक समाज सुधारक भी थे। उनके जीवन पर स्वामी दयानंद के विचारों का प्रभाव था। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने आर्य समाज अपना लिया। उनका व्यक्तित्व उदार विचारों से परिपूर्ण था। उन्होंने हरिजनों के उद्धार और विशेषकर महिला शिक्षा के कार्यों में विशेष योगदान देते हुए एक सच्चे समाज सुधारक की भूमिका भी निभाई। उन्होंने पंजाब में कई शैक्षणिक संस्थानों में धन का दान भी किया। वे विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे। उन्होंने उस समय

चल रही सामाजिक कुप्रथाओं का सीधे तौर पर विरोध किया। सन् १९६५ में वे इस नश्वर शरीर को छोड़ कर इस संसार को अलविदा कह कर चले गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात वे राजनीति से दूर हो गए। वे जब तक जीवित रहे देश सेवा में ही संलग्न रहे। ऐसे महान व्यक्तित्व और उदार विचारों वाले स्वतंत्रता सेनानी लाला दूनीचंद जी को हम सभी भारतवासी अपने हृदय में एक सदैव याद करते रहेंगे।

किरण बाला
अध्यापिका
व
सहायक संपादक
(चण्डीगढ़)

विज्ञापन और धोखाधड़ी

वर्तमान समय में सोशल मीडिया के जरिए लोगों पर दिखावे की संस्कृति ज्यादा हावी हो गयी है ।किसी कम्पनी ने दावा किया कि उसके बनाये प्रोटीन पावडर से बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा या बच्चों में विकास भली भांति होगा तो बिना विचारे लोग उसी प्रोडक्ट का प्रयोग बच्चों के लिए करने लगते हैं । कभी किसी ने कहा दिया की फलां कम्पनी का आटा स्वास्थ्य और ताजगी से भरपूर है तो लोग उसी को सही मान लेते हैं । सौन्दर्य के आकार्षण में सभी बंधे हैं जिसका सीधा फायदा सौन्दर्य उत्पाद बनाने वाली कंपनी को होता है । ईश्वर द्वारा वरदान स्वरूप मिले रंग रूप को बिसरा कर सौन्दर्य उत्पादो के पीछे दौड़ने वालों की कमी नहीं है। जब वास्तविकता में रसायनों से भरे सौन्दर्य उत्पादो से अच्छा भला चेहरा बिगाडकर अस्पतालों में इलाज कराने वालों की लाइन लगी है । शुद्ध देसी रीठा आंवला शिकाकाई के बालों के घरेलू नुस्खो को छोड़कर,रसायन मिले कंपनी उत्पाद के चक्कर में फंसकर बाल बढ़ाने की जगह ,बाल कम होने लगते हैं । शुद्ध सरसों के चिपचिपे तेल को गंवारों के लिए है कहने वाले ,रसायनों से साफ किये गये रिफाइंड तेलो का प्रयोग करने को अपनी शान समझते हैं। हमें विज्ञापन के जरिए बताया जाता है ।आप जो देशी खाना खा रहे हैं वह हमारे सेहत , जीवन के लिए अच्छी नहीं है , हमारी कंपनी के फलां उत्पादो के बिना आपका जीवन रोगमय है ।जबकि होता इसका उल्टा है ।

प्रत्येक कंपनी चाहे जितने दावे करे बिना रसायनों के किसी भी उत्पाद को बाजार में नहीं उतारती है । स्वयं विचार करें की रोजमर्रा में प्रयोग किया जाने वाला आटा चक्की से सामने पिसवा कर लाते हैं वह भी एक दो महीने रख दिया जाएगा तो कीड़े पड़ जाते हैं । लेकिन बाजार का पैकेट बंद आटा महीनों नहीं खराब होता है।आलू की सब्जी बना कर सामान्य तापमान पर रख दो तो चौबीस घंटे में ही खराब हो जाती है। लेकिन पैकेट बंद चिप्स वर्ष भर खराब नहीं होता। कैसे? क्योंकि बिना रसायनों के लम्बे समय तक खाद्य पदार्थ रखें ही नहीं जा सकते हैं। फिर वह कैसे हमे कैसे सेहतमंद बनाए सकते हैं।

सब कुछ कहने का तात्पर्य यही है तो अच्छे स्वास्थ्य, ताजगी स्फूर्ति से भरे से जीवन के लिए सोशल मीडिया पर दिखाये जाने वाले विज्ञापनो की धोखाधड़ी से बचें अपना और अपने बच्चों का जीवन खतरे में ना डाले।धोखेबाजी झूठ से भरी विज्ञापनो के मकड़जाल से बचना बहुत जरूरी है। यदि ऐसा नहीं किया तो कंपनियों के विज्ञापन लोगे के लालच का फायदा उठाकर हमेशा धोखा देते रहेगे।

ज्योति किरन रतन
शिक्षिका, लखनऊ उत्तर प्रदेश
094159 10781

लेखिका साहित्य सरोज की सांस्कृतिक कार्य योजना प्रभारी व संचालक हैं।

देश सुरक्षित नहीं तो कोई सुरक्षित नहीं

हृदय नारायण सिंह

भारत देश का बंटवारा धर्म के आधार पर हुआ। जिन्ना ने पाकिस्तान को इस्लामी राष्ट्र बना दिया। अब भारत को इसे हिंदू राष्ट्र घोषित करना था किंतु नेहरू जो खुद ही मुसलमान थे उन्हें यह बात पसंद नहीं थी और सरदार पटेल के बार-बार कहने के बाद भी इसे हिंदू राष्ट्र घोषित नहीं किया। फिर पटेल ने कहा कि सारे हिंदू भारत में आ जाए और मुस्लिम पाकिस्तान में चले जाएं यही बात जिन्ना भी कहते थे। जिन्ना का भी कहना था की दोनों के धर्म अलग-अलग है इसलिए यह एक साथ नहीं रह सकते। अन्यथा की स्थिति में हमेशा दोनों के बीच मारपीट एवं गृह युद्ध होता रहेगा।

बार-बार सरदार पटेल के कहने के बाद भी नेहरू ने ऐसा नहीं होने दिया और ३ करोड़ मुसलमानो को भारत में ही रख दिया। इतना ही नहीं शुरू से ही भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने की सोच को लेकर वह चले। इस देश को धर्मनिरपेक्ष होते हुए भी पहले अल्पसंख्यक बोर्ड बनाया। फिर वक़्फ़ बोर्ड बना दिया। उनकी आने वाली संतानों ने लगातार इस कानून को और अधिक प्रभावशाली बनाने का काम किया। इस बोर्ड को इतना अधिकार दिया कि पूरे हिंदुस्तान को भी अगर कह दे कि हमारी जमीन है तो पूरा भारत उनका हो जाएगा। इसे हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट में भी चैलेंज नहीं किया जा सकता। इतना ही नहीं कश्मीर में धारा ३७० एवं ३५ लगाकर देश के संविधान से अलग कर दिया।

इसके बाद भी यह जानते हुए भी कि राष्ट्र मुस्लिम राष्ट्र होने के कगार पर है और जिस दिन राहुल सत्ता में आएंगे उसी दिन से इसे पूर्ण रूप से मुस्लिम राष्ट्र बनाने के लिए जो भी और कानून बनाने होंगे उसे बनाकर ५ साल के अंदर ही मुस्लिम राष्ट्र बनाने की साजिस लगती है। जैसे पहले की तरह लगभग ५० हिंदू राष्ट्र को जिस तरह से मुस्लिम राष्ट्र बनाया गया बस उसी स्थिति में भारत को भी बनाने की नेहरू परिवार द्वारा योजना बनाई जा चुकी है। इसके बाद भी लोग कांग्रेस को यानी एक पारिवारिक पार्टी को वोट दे रहे हैं तो यह बात समझ में नहीं आती।

एक बढ़िया मौका आया जब २०१४ में मोदीजी की सरकार आई। तो ऐसा लग रहा था कि जनसंख्या नियंत्रण, यूनिफॉर्म सिविल कोड, अब जल्दी ही लागू हो जाएगा ताकि मुस्लिम चार बीवी और ४० बच्चे पैदा करके देश की जनसंख्या में बेतहासा वृद्धि न कर सके।

अल्पसंख्यक बोर्ड और वक़्फ़ बोर्ड समाप्त करके मोदी जी इस देश को बचा लेंगे। देश में एनआरसी लागू करके घुसपतियों को बाहर निकाल देंगे किंतु धारा ३७० और ३५ए समाप्त करके यह अगले कार्यकाल के लिए अपनी कुर्सी को सुरक्षित करने के चक्कर में पड़ गए।

दूसरे कार्यकाल में भी बहुमत में आए तब इन्होंने तीन तलाक और राम जन्मभूमि का वारा न्यारा कराया। और सोचे कि अगले कार्यकाल के लिए हमारी कुर्सी सुरक्षित हो गई। कछुए की चाल में चलते रहे और मुख्य मुद्दों को लटकाए रहे। लेकिन जनता ने ऐसा सबक सिखाया की चाह करके भी अब कुछ विशेष नहीं कर सकते क्योंकि उनकी सरकार बहुमत में नहीं है। यह सरकार नीतीश और नायडू जैसे बहुरूपिया के वल पर चल रही है जो कभी भी धोखा देने के लिए प्रसिद्ध एवं माहिर है।

काश मोदी जी स्वार्थ में आकर अगले कार्यकाल के बारे में अपनी कुर्सी सुनिश्चित करने के बजाय देश के लिए अपने आप को

समर्पित कर देते तो आज यह देश पूर्ण रूप से सुरक्षित हो जाता। सबका साथ सबका विकास एवं सब का प्रयास का गीत गाने के बजाय राष्ट्र का विकास एवं राष्ट्र प्रथम का लक्ष्य बनाकर ५ साल के अंदर इन सारे काले कानून को समाप्त कर दिए होते तो राजनीति में चिरकाल तक याद किए जाते और उनकी सरकार कई टर्म जीत सकती थी। अब यह देश मजधार में पड़ा है। हम सभी मजधार में पड़े हैं। आगे प्रभु की मर्जी।

जब तक देश सुरक्षित नहीं है कोई सुरक्षित नहीं है। अफगानिस्तान का क्या हुआ हर कोई जानता है। राष्ट्र सर्वोपरि है। इसलिए राष्ट्र को बचाने के लिए हिंदुओं का एक रहना बहुत जरूरी है।

प्रभु ने चाहा तो कोई नेता जरूर आएगा जो सत्ता सुख के लिए मुस्लिम वोटो का भूखा नहीं होगा और बहुमत में आते ही देश से इस कोढ रूपी कलंकित कानून को समाप्त करके इस राष्ट्र को बचा लेगा। कोई आएगा जो काले कानून को समाप्त कर देगा जिसे कांग्रेस ने इस देश पर लाद दिया था ताकि भविष्य में इस राष्ट्र को मुस्लिम राष्ट्र बनने में कोई रुकावट ना आवे। तथाकथित सेकुलर नेताओं से जो सत्ता प्राप्त करने के लिए कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार है उनसे भगवान ही इस देश को बचा सकते हैं। शेष प्रभु की मर्जी।

हृदय नारायण सिंह
गहमर, गाजीपुर
63860 70075
(लेखक गहमर इंटर कालेज गहमर के पूर्व प्रवक्ता हैं।)

RNI No. UPHIN/2017/74520, ISSN No. 2584-0843, UDYAM-UP-30-0000534

EverGreenMrs india Competition

Beauty of Indian Culture

25 February 2025 ,Gahmar Ghazipur

(Award - Cash Prise 20000Rs/ 15000 Rs/ 10000 Rs Sash, Trophy, Crown,Gift Hamper Certificate, , Photo PortfolioOpportunity to work in short and ad films)

Program

24 December 24 to 25 February 25

21 Selection Rounds & Audition in
21 Cities of 15 States of India

State wise Semi Finals

23 **february to 2**4 **February**

Varanasi, Uttar Pradesh

Election

Mrs. State Runner, Winner ,Queen

Award -

Sash, Trophy, Crown, Certificate, Gift Hamper, Photo Portfolio, Entry Mrs India Competition final Round

Age Group 20 To 50
Entry Fee
Selection Rounds 1100/Rs Only
Semi Finla Round Reg 1500/-
Final Round Reg 2500/ Only

Registration Open
9289615645
ड्रेस कोड
साड़ी, सूट, लहंगा, गाउन

Director
Akhand Prata Singh
9451647845

More information https://evergreenmrsindia.in

अभिलाषा बनी मिसेज छत्तीसगढ़ की विनर तो आरजू बनी रनर

(मिसेज इंडिया कम्प्टीशन एडमिशन राउंड)

साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा नगरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को ग्लैमर की दुनिया से जोड़ने एवं भारतीय एवं पाश्चात संस्कृति के मध्य अंतर समझने के उद्धेश्य से अपने सहायक प्रतिष्ठान एवरग्रीन फिल्म एवं विज्ञापन प्रोडक्शन के सहयोग से पूरे भारत में एवरग्रीन मिसेज इंडिया कम्पटीशन का आयोजन किया जा रहा है। एवरग्रीन मिसेज इंडिया के एडमिशन राउड़ के प्रथम चक्र में ८ सितम्बर २०२४ को सिद्वि मुस्कान भवन बिलासपुर में मिसेज छततीसगढ़ का आयोजन किया गया ।

बिलासपुर में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यअतिथि फिल्म निर्माता सुनील दत्त मिश्र, विशिष्ठ अतिथि विद्या सिंह एवं आयोजन प्रभारी डॉ शीला शर्मा ने द्वीप प्रज्ज्वलन एवं फीटा काट कर किया गया। कम्पटीशन के प्रथम चक्र में अभिलाषा झा, प्रियंका बनर्जी, पूजा सिंह, प्रणिता पटेल, उमा पाठक, राजकुमार पटेल, सिम्पू शुक्ला, आरजू सिद्वकी, रश्मी सिंह, सहित कुल १५ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिसमें प्रथम चक्र में परिचय राउंड, रैंप वाक राउंड, एक्टिविटी राउंड सम्पन्न हुए।

द्वितीय चक्र में कुल आठ महिलाओं ने प्रवेश पाया जिसमें प्रियंका बनर्जी जो फोटो जनिक फेस एवार्ड, प्रणिता पटेल को मिसेज परफ्टेक्ट एवार्ड, पूजा सिंह को छत्तीसगढ़ क्वीन एवार्ड दिया गया। प्रतियोगिता में एवरग्रीन मिसेज छत्तीसगढ़ की उपविजेता आरजू सिद्वकी रही। एवरग्रीन मिसेज छत्तीसगढ़ का खिताब अभिलाषा झा को दिया गया।

सभी विजयी प्रतिभागीयों को साहित्य सरोज के संपादक अखंड गहमरी एवं बिलासपुर प्रभारी डां शीला शर्मा, गौरी कश्यप, ज्योत्स्ना मिश्रा एवं गीता सिंह के द्वारा क्राउन, सैसे, एवं एवरग्रीन मिसेज इंडिया के फाइनल का टिकट देकर सम्मानित किया गया। साहित्य सरोज पत्रिक के द्वारा विश्व रिकॅार्ड धारी सुषमा पांड्या को आयरन लेडी, डह्न अलका यादव को साहित्य सरोज शिक्षक सम्मान, डॉ रितेश पाण्डेंय एवं सरित पाण्डेय को साहित्य सरोज गौरव सम्मान दिया गया।

साहित्य सरोज के संपादक अखंड प्रताप सिंह के द्वारा डह्न शीला शर्मा को पत्रिका का छत्तीगढ़ प्रभारी नियुक्त कर उनका सम्मान किया गया । इस पर पत्रिका द्वारा ज्योत्सना मिश्रा, गौरी कश्यप, का सम्मान किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना नृत्य से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य सरोज पत्रिका के संपादक अखंड गहमरी एवं संचालन संजय मैथिल एवं बीना भारद्वाज ने किया।

इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए साहित्य सरोज की सांस्कृतिक कार्य संपादक लखनऊ की ज्योति किरण रतन ने बताया कि साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा शुरू किये गये इस अभियान में अब व्यापक बदलाव किये जा रहे हैं। जिसके तहत अब हम एक राज्य में एक जगह कार्यक्रम नहीं करके पूरे भारत के १५ राज्य में २१ शहर या गॉव में कैंप लगा कर प्रवेश चक्र का आयोजन करेगें। यह राज्य से जितने भी प्रतिभागी आयेगें वो २३ फरवरी को वाराणसी में सेमी फाइनल राउंड खेलेगें जिसमें २ विजेताओं को उस स्टेट की सुंदरी विजेता एवं उप विजेता दिया जायेगा।

२५ फरवरी को एवरग्रीन मिसेज इंडिया का फाइनल चक्र होगा, जिसमें एवरग्रीन मिसेज इंडिया विजेता, उप विजेता, क्विन एवं फोटो जनिक फेस का का खिताब दिया जायेगा। विजेताओं को क्राउन, सैसे, उपहार, नगद राशि, मैडल एवं सम्मान पत्र दिये जायेगें।

एडमिशन राउंड २५ दिसम्बर २०२४ से २० फरवरी २०२४ तक भारत के विभिन्न शहरो में चलेगा, इसकी जानकारी ९४५१३४७८४५ एवं वेबसाइट https://evergreenmrsindia.in से प्राप्त की जा सकती है।

शीला की कलम से
महारानी अहिल्याबाई होलकर

बहुत कम लोग ऐसे होते है जो स्थान और समय की सीमाओं को तोड़ , लोगो के दिलो में अपना स्थान बना लेते है , जीते जी किवदंती बन जाते है। होल्कर साम्राज्य की महारानी अहिल्याबाई ऐसी ही एक महिला थी जो अपनी न्यायप्रियता और प्रजावत्सलता के लिए जानी जाती हैं। उनकी न्यायप्रियता के किस्से आज भी एक आदर्श प्रस्तुत करते है। इसीलिए भारत के समूचे ज्ञात इतिहास में अहिल्याबाई होल्कर का स्थान अद्वितीय है"।नैतिक आचरण के कारण समाज ने उन्हें देवी का दर्जा दिया था, आज भी अहिल्याबाई होलकर का नाम सुनकर लोगो का मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है।जिस वक्त राजनीति और प्रशासन में महिलाओ की भूमिका नगण्य थी, ऐसे समय मेंअहिल्याबाई होल्कर जो हाथी की पीठ पर चढ़कर करती थीं युद्ध, पति-पुत्र की मृत्यु के बाद संभाली राज्य की कमान।

भारत के मराठा मालवा राज्य की होलकर रानी थीं। राजमाता अहिल्याबाई का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर के जामखेड के चोंडी गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी राजधानी को नर्मदा नदी के किनारे इंदौर के दक्षिण में महेश्वर में स्थानांतरित कर दिया अहिल्याबाई के पति खंडेराव होलकर १७५४ में कुंभेर की लड़ाई में मारे गए थे। बारह साल बाद, उनके ससुर मल्हार राव होलकर की मृत्यु हो गई। उसके एक साल बाद उन्हें मालवा राज्य की रानी के रूप में ताज पहनाया गया। उन्होंने अपने राज्य को लूटने वाले आक्रमणकारियों से बचाने की कोशिश की। उन्होंने खुद युद्ध में सेनाओं का नेतृत्व किया। उन्होंने तुकोजीराव होलकर को सेना प्रमुख नियुक्त किया।रानी अहिल्याबाई हिंदू मंदिरों की महान अग्रणी और निर्माता थीं। उन्होंने पूरे भारत में सैकड़ों मंदिर और धर्मशालाएँ बनवाईं।

अहिल्याबाई का जन्म ३१ मई १७२५ को महाराष्ट्र के वर्तमान अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में हुआ था। उनके पिता मनकोजी राव शिंदे गांव के पाटिल थे। उस समय महिलाएं स्कूल नहीं जाती थीं, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया।

इतिहास के मंच पर उनका प्रवेश एक दुर्घटना की तरह था: मराठा पेशवा बालाजी बाजी राव की सेवा में एक कमांडर और मालवा क्षेत्र के स्वामी मल्हार राव होलकर, पुणे के रास्ते में चौंडी में रुके और किंवदंती के अनुसार, गांव में मंदिर सेवा में आठ वर्षीय अहिल्याबाई को देखा। उसकी धर्मपरायणता और उसके चरित्र को पहचानते हुए, वह लड़की को अपने बेटे खंडेराव (१७२३-१७५४) की दुल्हन के रूप में होलकर क्षेत्र में ले आए। १७३३ में उनकी शादी खंडेराव होलकर से हुई। १७४५ में, उन्होंने अपने बेटे मालेराव को जन्म दिया और १७४८ में, एक बेटी मुक्ताबाई को जन्म दिया।

मालेराव मानसिक रूप से अस्वस्थ थे और १७६७ में उनकी बीमारी से मृत्यु हो गई। अहिल्याबाई ने एक और परंपरा को तोड़ा जब उन्होंने अपनी बेटी की शादी यशवंतराव से की, जो एक बहादुर लेकिन गरीब आदमी था, जब उसने डकैतों को हराने में सफलता हासिल की थी।दस-बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ। उनतीस वर्ष की अवस्था में विधवा हो गईं। पति का स्वभाव चंचल और उग्र था। वह सब उन्होंने सहा। फिर जब बयालीस-तैंतालीस वर्ष की थीं, पुत्र मालेराव का देहांत हो गया।

जब अहिल्याबाई की आयु बासठ वर्ष के लगभग थी, दौहित्र नत्थू चल बसा। चार वर्ष पीछे दामाद यशवंतराव फणसे न रहा और इनकी पुत्री मुक्ताबाई सती हो गई। दूर के संबंधी तुकोजीराव के पुत्र

मल्हारराव पर उनका स्नेह था; सोचती थीं कि आगे चलकर यही शासन, व्यवस्था, न्याय और प्रजारंजन की डोर सँभालेगा; पर वह अंत-अंत तक उन्हें दुःख देता रहा।

योगदान

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्यक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। और, आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं-मरते दम तक। ये उसी परंपरा में थीं जिसमें उनके समकालीन पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई। अपने जीवनकाल में ही इन्हें जनता 'देवी' समझने और कहने लगी थी। इतना बड़ा व्यक्तित्व जनता ने अपनी आँखों देखा ही कहाँ था। जब चारों ओर गड़बड़ मची हुई थी। शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे। प्रजाजन-साधारण गृहस्थ, किसान मजदूर-अत्यंत हीन अवस्था में सिसक रहे थे। उनका एकमात्र सहारा-धर्म-अंधविश्वासों, भय त्रासों और रूढ़ियों की जकड़ में कसा जा रहा था। न्याय में न शक्ति रही थी, न विश्वास। ऐसे काल की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया-और बहुत किया।-वह चिरस्मरणीय है। इंदौर में प्रति वर्ष भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव होता चला आता है।

अहिल्याबाई जब ६ महीने के लिये पूरे भारत की यात्रा पर गई तो ग्राम उबदी के पास स्थित कस्बे अकावल्या के पाटीदार को राजकाज सौंप गई, जो हमेशा वहाँ जाया करते थे। उनके राज्य संचालन से प्रसन्न होकर अहिल्याबाई ने आधा राज्य देने को कहा परन्तु उन्होंने सिर्फ यह मांगा कि महेश्वर में मेरे समाज लोग यदि मुर्दो को जलाने आये तो कपड़ो समेत जलाये।

मतभेद

उनके मंदिर-निर्माण और अन्य धर्म-कार्यों के महत्त्व के विषय में मतभेद है।(१) इन कार्यों में अहिल्याबाई ने अंधाधुंध खर्च किया और सेना नए ढंग पर संगठित नहीं की। तुकोजी होलकर की सेना को उत्तरी अभियानों में अर्थसंकट सहना पड़ा, कहीं-कहीं यह आरोप भी है(२) इन मंदिरों को हिंदू धर्म की बाहरी चौंकियाँ बतलाया है।(३) तुकोजीराव होलकर के पास बारह लाख रुपए थे जब वह अहिल्याबाई से रुपए की माँग पर माँग कर रहा था और संसार को दिखलाता था कि रुपए-पैसे से तंग हूँ। फिर इसमें अहिल्याबाई का दोष क्या था ?(४) हिंदुओं के लिए धर्म की भावना सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति रही है; अहिल्याबाई ने उसी का उपयोग किया। तत्कालीन अंधविश्वासों और रुढ़ियों का वर्णन उपन्यास में आया है। इनमें से एक विश्वास था मांधता के निकट नर्मदा तीर स्थित खडी पहाड़ी से कूदकर मोक्ष-प्राप्ति के लिए प्राणत्याग-आत्महत्या कर डालना।

विचारधाराएं

अहिल्याबाई के संबंध में दो प्रकार की विचारधाराएँ रही हैं। एक में उनको देवी के अवतार की पदवी दी गई है, दूसरी में उनके अति उत्कृष्ट गुणों के साथ अंधविश्वासों और रूढ़ियों के प्रति श्रद्धा को भी प्रकट किया है। वह अँधेरे में प्रकाश-किरण के समान थीं, जिसे अँधेरा बार-बार ग्रसने की चेष्टा करता रहा। अपने उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज में उन्हें देवी का दर्जा मिला।

सेनापति के रूप में

मल्हारराव के भाई-बंदों में तुकोजीराव होल्कर एक विश्वासपात्र युवक थे। मल्हारराव ने उन्हें भी सदा अपने साथ में रखा था और राजकाज के लिए तैयार कर लिया था। अहिल्याबाई ने इन्हें अपना सेनापति बनाया और चौथ वसूल करने का काम उन्हें सौंप दिया। वैसे तो उम्र में तुकोजीराव होल्कर अहिल्याबाई से बड़े थे, परंतु तुकोजी उन्हें अपनी माता के समान ही मानते थे और राज्य का काम पूरी लगन ओर सच्चाई के साथ करते थे। अहिल्याबाई का उन पर इतना प्रेम और विश्वास था कि वह भी उन्हें पुत्र जैसा मानती थीं। राज्य के काग़ज़ों में जहाँ कहीं

उनका उल्लेख आता है वहाँ तथा मुहरों में भी 'खंडोजी सुत तुकोजी होल्कर' इस प्रकार कहा गया है।

मृत्यु

राज्य की चिंता का भार और उस पर प्राणों से भी प्यारे लोगों का वियोग। इस सारे शोक-भार को अहिल्याबाई का शरीर अधिक नहीं संभाल सका। और १३ अगस्त सन् १७९५ को उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। अहिल्याबाई के निधन के बाद तुकोजी इन्दौर की गद्दी पर बैठा।

देश में स्थान

स्वतंत्र भारत में अहिल्याबाई होल्कर का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। इनके बारे में अलग अलग राज्यों की पाठय पुस्तकों में अध्याय मौजूद हैं। स्कूली बच्चे अहिल्याबाई के बारे में चाव से पढ़ते हैं और उन से प्रेरणा लेते हैं।चूंकि अहिल्याबाई होल्कर को एक ऐसी महारानी के रूप में जाना जाता है, जिन्होंनें भारत के अलग अलग राज्यों में मानवता की भलाई के लिये अनेक कार्य किये थे। इसलिये भारत सरकार तथा विभिन्न राज्यों की सरकारों ने उनकी प्रतिमायें बनवायी हैं और उनके नाम से कई कल्याणकारी योजनाओं भी चलाया जा रहा है।ऐसी ही एक योजना उत्तराखंड सरकार की ओर से भी चलाई जा रही है। जो अहिल्याबाई होल्कर को पूर्ण सम्मान देती है।

इस योजना का नाम 'अहिल्याबाई होल्कर भेड़ बकरी विकास योजना है।अहिल्याबाई होल्कर भेड़ बकरी पालन योजना के तहत उत्तराखंड के बेरोजगार, बीपीएल राशनकार्ड धारकों, महिलाओं व आर्थिक सहायता के रूप से कमजोर लोगों को बकरी पालन यूनिट के निर्माण के लिये भारी अनुदान राशि प्रदान की जाती है। लगभग १००००० रूपये की इस युनिट के निर्माण के लिये सरकार की ओर से ९१७७० रूपये सरकारी सहायता रूप में अहिल्याबाई होल्कर के लाभार्थी को प्राप्त होते हैं।

डॉ शीला शर्मा
अध्यापिका
व समाजसेवी
बिलासपुर ,छ.ग. 95895 91992
(लेखिका साहित्य सरोज पत्रिका की छत्तीसगढ़ प्रभारी भी हैं)

फिटनेस कोच का प्रेम-पत्र

रज्जु

जब से तुम मेरी ज़िन्दगी में आए हो, सब कुछ बदल गया है। जैसे कोई अच्छा स्वास्थ्य हमारे शरीर को संतुलन देता है, वैसे ही तुमने मेरे दिल को सुकून दिया है। तुम मेरे जीवन का वह योग हो, जो मुझे मानसिक और भावनात्मक शांति प्रदान करता है। तुम्हारी मुस्कान, जैसे एक संतुलित आहार, मुझे ऊर्जा से भर देती है। जब मैं तुम्हें देखती हूँ, तो मुझे वही खुशी मिलती है जो एक व्यक्ति को अपनी सेहत में सुधार देखकर मिलती है। तुम्हारे साथ बिताया हर पल, मेरे लिए एक स्वस्थ दिनचर्या का हिस्सा है, जो मुझे अंदर से मजबूत और खुशहाल बनाता है।जैसे एक स्वस्थ शरीर और मन के लिए सही पोषण, व्यायाम, और आराम की ज़रूरत होती है, वैसे ही मेरी आत्मा के पोषण के लिए तुम्हारा प्यार ज़रूरी है। तुम मेरे जीवन के वो वर्कआउट हो, जिसे करने से मैं हर दिन और बेहतर बनती हूँ।

तुम्हारे साथ बिताए पल, जैसे मेडिटेशन की तरह मेरे तनाव और चिंताओं को दूर कर देते हैं। तुम्हारी हंसी मेरी खुशी की योग मुद्रा है, जिसमें मैं खुद को पूरी तरह से स्वस्थ और संतुलित महसूस करती हूँ। जैसे एक संतुलित आहार शरीर को ऊर्जा देती है, वैसे ही तुम्हारी मौजूदगी मेरी आत्मा को शक्ति देती है।तुम्हारे बिना मेरा दिल एक बेमकसद की ट्रेनिंग की तरह है, जैसे बिना सही मार्गदर्शन के की गई कसरत। तुम ही वो ट्रेनर हो, जिसने मेरे जीवन को सही दिशा दी है, जो हर कदम पर मुझे प्रेरित करता हो कि मैं बेहतर बन सकूं, खुद का सबसे फिट और खुशहाल संस्करण।जैसे एक वेलनेस प्लान में अनुशासन और निरंतरता की ज़रूरत होती है, वैसे ही मैं वादा करती हूँ कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ खड़ी रहूंगी, तुम्हें समझने, समर्थन देने और प्यार करने के लिए। हम मिलकर एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन का निर्माण करेंगे, जिसमें प्यार, देखभाल और संतुलन होगा।मैं वादा करती हूँ कि जैसे एक अच्छा स्वास्थ्य हमेशा ध्यान और देखभाल मांगता है, वैसे ही मैं तुम्हें हमेशा समझूंगी और हर कदम पर तुम्हारा साथ दूंगी।

सिर्फ़ तुम्हारी,
रेखा
फिटनेस कोच, छत्तीसगढ़
93031 22307

डॉ रेनुका की कहानी
पुनर्वास
8506914478

कन्याकुमारी के रामकृष्ण आश्रम से ४ बजे सुबह ही निकल सूर्योदय -दर्शन कर,वही से हम विवेकानंद रहक के लिये स्टीमर से चल पड़े। सागर का नीला विस्तृत आकाश,उठती -गिरती लहरें।अचानक सामने की सीट पर डॉ दास। बार-बार मेरी नजरें वही पहुँच टटोलने लगती, बिल्कुल वैसा ही रूप-रंग,वैसी ही कद -काठी,।बस चेहरे पर तैर रही उदासी के बीच उम्र का विस्तार।फिर भी डायरेक्टर के पद का तेज ।

डॉ दास यहाँ कैसे? वो तो फैजाबाद के कुमारगंज ,कृषि-संस्थान के डायरेक्टर पद से रिटायर हुए थे। मैं भी तो थी, उनकी विदाई -समारोह में।बाद में भी मुलाकात होती रही थी । मृदुभाषी, मिलनसार, विनम्र व्यक्तित्व ।दोनो बेटियां भोपाल में ही थी ।बेटा-बहू साथ में कानपुर में थे।लग तो डॉ दास ही रहें हैं।इन्ही उधेड़बुन में हम विवेकानंद रॉक पहुच गये,और सब उतर कर इधर-उधर बिखर गुम हो गये।

लौटते- लौटते ३ बज चुके थे ।रूम में थोड़ी देर आराम कर हम फिर निकल पड़े आश्रम घूमने । सामने से फिर वही शख्सियत । बिल्कुल करीब पहुंच मैंने कहा डॉ दास ? ,ओ ओ मृणालिनी,,,, तुम ? यहाँ कैसे सर ? पहले आओ, आओ मेरे साथ, अगले ही पल हम उनके कमरे में थे। तख्त पर बिस्तर लगा था,कुसी ,मेज ,कुछ किताबें।उन्होंने सहायक से चाय मंगाई । मेरी आँखों मे तैर रहे प्रश्न,जस के तस थे।उन्होंने स्वयं ही बताना शुरू किया कि रिटायरमेन्ट के बाद कुछ महीने बाद ही मैडम को कैंसर पता चला जो लास्ट स्टेज थी ।मैं पूरे समय अस्पताल और घर के बीच घूमता, उनकी सेवा में लगा रहता ।

बहू ने जीना मुहाल कर दिया था रोज लड़ती उलाहने देती। एक दिन उन दोनों ने सामान लादा और कहीं अलग रहने चले गए। कभी पलट कर माँ को देखने तक नही आये। मैडम आखिरी समय तक बहुत हिम्मत से हालात से जूझती रही ,मेरा हौसला बढ़ाती रही। एक रोज मुझसे वचन लिया कि मैं उनके शरीर को बेटे -बहु को छूने नही दूँगा। उसके दो रोज बाद ही वह चल बसी । मैं टूटा हुआ ,बेजार ,बेटे को खबर दू या,न दूँ जाने दो,क्रुद्ध हो कह गई है। थी तो मां ही। मैंने बेटे को खबर की। दोनो आये। सारे कर्मकांड के बाद एक दिन बेटे ने कहा, पापा, आप अकेले कैसे रहियेगा ? मैं क्या कहता। अगले ही दिन वो और बहू सामान सहित आ गया। मैं भी तसल्ली में था, चलो जब भी जागे तभी सबेरा।

कुछ दिनों बाद ही एक रोज बेटा आकर खड़ा हो गया. बोला पापा ! मुझे बिजनेस डालना है, पैसों की जरूरत है। कितने चाहिए? जितने हो सके। जानते ही है दस-बारह लाख से नीचे कोई छोटा सा बिजनेस भी शुरू नही किया जा सकता। मुझे रात भर सोचने विचारने में बीता बच्चा तो अपना ही है, मरे-जिये इसी का तो है । यही विचार लिए मैने अगली सुबह चेक उसे थमा दिया। कुछ दिन सब ठीक रहा। खाना खाते समय एकदिन बेटे ने कहा-' पापा! घर के पेपर कहाँ हैं? निकाल दीजिए । ' जब तक जीवित हूँ घर के पेपर नही दूंगा ,उसके बाद सब तुम्हारा,मैंने भी साफ- साफ कह दिया । मेरा खाना बंद कर दिया उन्होंने। मैं अपना भोजन खुद बनाने लगा ।

दिन भर बहू मुझ पर चीखती ,गालियां देती,बेटा कुछ सुनने को तैयार नही था।उसकी भी सहमति थी । एक रात बहू जोर- जोर से चिल्लाने लगी -'अरे ये बुड्ढा सठिया गया है, मेरे कमरे में घुसता है।' मैं सन्न ,इतना बड़ा लांक्षन एक बार लगा मैं चक्कर खा कर गिर जाऊंगा । किसे -किसे सफाई दूँगा, कमरे में कुछ देर को बिलख पड़ा, फिर उठा , बैग में कपड़े डाले, सारे पेपर्स डाले और निकल पड़ा। कहाँ जाऊ क्या करूँ ?

बेटियों के घर! नहीं। आँसू बह रहे थे।स्टेशन पहुँचा सामने ट्रेन खड़ी थी बैठ गया उसमें ।अगली दूसरी शाम मैं कन्याकुमारी में था। स्टेशन के सामने ही आश्रम की बस खड़ी थीं,उसमें बैठ गया। बस तभी से यही आश्रम में हूँ।यही मेरा घर,यही मेरा परिवार -बोलते डॉ दास हाँफने लगे थे।आश्रम ने एग्रीकल्चर विभाग की जिम्मेदारी सौंप दी है।मैंने भी उसी में खुद को खपा दिया है। कैसा घर ,कैसा परिवार, हमने अपने स्वरूप को , अपना परिचय अब जाना है ।जीवन सचमुच कितना बड़ा भरम है. हम कितने सच्चे होने का दावा करते हैं, मगर हजारों हजार झूठ से बिंधे रहते हैं।कुछ चाह कर कुछ अनचाहे, अनजाने ।' मृणालिनी!' मैंने मैडम का वचन तोड़ा ,बेटे के मोह में उसी का दंड भोग रहा हूँ,'गहरी सांस ले रहे थे डॉ दास। एक चुप्पी पसर गई थी । सहायक ने चाय लेकर आ गया था ।

डॉ रेनू सिंह
गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश।

पानी के कैप्सूल

किरण बाला
(चंडीगढ़)
98035 64330

समर्थ लगातार चलता ही जा रहा था। पसीने से लथपथ , उसकी गाड़ी चलते-चलते अचानक रूक गई थी। उसने बोनट खोल कर देखा तो उसमें से धुआँ निकल रहा था । दूर-दूर तक पानी का नामो -निशान नहीं था , चारों तरफ सूखी जमीन पर इक्के -दुक्के कंटीले झाड़ ही नजर आ रहे थे । उसके पास चलने के सिवाय कोई चारा न था । इस उम्मीद में कि कहीं कोई मदद मिल जाए । दूर से ही उसे धुएँ के गुबार नज़र आ रहे थे। जो कि वहाँ पर लगी फैक्ट्रियों से निकल रहे थे। जमीन मानो राख का मैदान बन चुकी थी । सम्पूर्ण दृश्य को देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो कोई विकराल दैत्य उसे अपनी गिरफ्त में लेने को है।

नजदीक पहुंचने पर उसने देखा कि एक नन्हा बालक रेत पर पाँव पसारे अपने सामने रखी बाल्टी में अपने कोमल हाथों से उस रेत को भरने का प्रयास कर रहा है। थोड़ा आगे चलने पर उसे बहुमंजिला इमारतें दिखाई दीं। उसके कदम और तेज हो चल थे। नजदीक पहुंचने पर उसने देखा कि कुछ मशीननुमा मानव इधर-उधर घूम रहे हैं। उसने एक व्यक्ति से पूछा, "यहाँ कहीं पानी मिलेगा क्या "? समर्थ हैरान था कि कोई उसे उत्तर क्यों नहीं दे रहा?

"मेरा गला सूख रहा है .. मुझे पानी चाहिए," उसने अन्य व्यक्ति से दोबारा कहा । ये सब क्या है ? इतने असंवेदनशील इंसान । यह सोचते-सोचते वह एकाएक बेहोश हो गया । जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को आधुनिक मशीनों से घिरे हुए एक हॉलनुमा कमरे में पाया । उसके सामने श्वेत वस्त्र धारी एक बुजुर्ग खड़े मुस्कुरा रहे थे । आप कौन हैं ? मैं यहाँ कैसे आया? ये कौन सी जगह है? समर्थ ने एक साथ कई प्रश्न कर डाले।

मैं एक वैज्ञानिक हूँ और मेरी उम्र लगभग २०० वर्ष है । ये जो तुम मशीनें देख रहे हो न, वो पानी के कैप्सूल बनाने की मशीनें हैं ।पानी के कैप्सूल ! समर्थ को मानो विश्वास नहीं हो रहा था । तुम मानो या ना मानो यही सत्य है,वैज्ञानिक ने कहा। अब धरती पर पानी लगभग समाप्ति के कगार पर है । कहीं-कहीं खोजने पर

ही काफी गहराई में जाकर पानी मिल पाता है । जल के अभाव में अधिकतर कीट,जीव-जन्तु, वनस्पति दम तोड़ चुके हैं । पर्यावरण असंतुलन के कारण प्रकृति अपना विकराल रूप धारण कर चुकी है । सूखा, अकाल, बाढ़, जैविक महामारी, विषाणु संक्रमण, अनगिनत रोगों का प्रकोप धीरे-धीरे मानव जाति को लील चुका है । जो मानव शेष भी हैं तो वो इतने शिथिल हो चुके हैं कि कार्य करने में असमर्थ हैं। औषधि प्रयोग के कारण बस निर्जीव के समान जीवन यातना को झेल रहे हैं । ये जो मशीनी मानव देख रहे हो न, यही सम्पूर्ण व्यवस्था को सँभाले हुए हैं । यदि जल नहीं है, वनस्पति नहीं है तो फिर शेष जीवित प्राणी क्या खाकर जीवित हैं ! समर्थ के आश्चर्य की सीमा बढ़ती जा रही थी।

जिस प्रकार पानी के कैप्सूल बनाए गए हैं, वैसे ही भोजन की तृप्ति के लिए भी कैप्सूल बनाए जाते हैं जो शारीरिक जरूरतों को पूर्ण करते हैं । उनसे केवल क्षुधा को ही शान्त किया जा सकता है, शारीरिक चुस्ती, स्फूर्ति और बुद्धि को विकसित नहीं किया जा सकता । (बुजुर्ग व्यक्ति ने जवाब दिया) और वो बच्चा जो रेत पर बैठा हुआ था ... वो कौन था और क्या कर रहा था ? समर्थ ने वैज्ञानिक से पूछा। वो ! वो तो भविष्य है बेचारा ! पानी की खोज में लगा है इस उम्मीद के साथ कि कोई तो उसकी ओर ध्यान दे,उसका साथ दे।

काश! मानव ने लापरवाही ना बरती होती, प्रकृति की अवहेलना नहीं की होती, अपने स्वार्थ के लिये उसका दुरूपयोग ना किया होता तो आज परिस्थितियाँ प्रतिकूल नहीं होतीं । (समर्थ मन ही मन सोचने लगा)

"ये लड़का भी न,नींद में न जाने क्या बड़बड़ाता रहता है ? सूरज सिर पर चढ़ आया है, उठना नहीं है क्या ?"

माँ की आवाज से समर्थ की नींद टूट जाती है और वह सोचता है कि शुक्र है, ये केवल सपना ही था ।जरा सोचो, यदि यह हकीकत होता तो !

संस्कार की पाठशाला

कभी मैकाले ने जो बीज बोये थे, आज उनकी कटीली फसल से समूचा देश लहूलुहान हो रहा है। पर मैकाले से मुकाबला कौन करे? यह सवाल आज के दौर में उसी तरह से है, जिस तरह कभी चूहों के झुंड में यह सवाल उठता था कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? नुकसान से सभी परिचित हैं, पर समाधान का साहस कौन करे? आज की शिक्षा में कुंठा, निराशा और हताशा की पर्याय बनी कुछ डिग्रियां, उपाधियों के छोटे बड़े ढेर बचे हैं। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य ने यह सिद्ध कर दिया कि वैचारिक साम्राज्य की स्थापना, राजनीतिक साम्राज्य की स्थापना से कहीं ज्यादा प्रभावी होता है ,क्योंकि वह समाज के जीवन और संस्कृति में गहरी घुसपैठ कर जाती है। यह अचेतन रूप से आदमी के सोंच विचार की प्रक्रिया और वैचारिक जीवन को बदल देती है।

यदि कोई बाहरी देश आक्रमण करे तो उसका प्रतिकार लड़कर किया जाता है और सजगता रहे तो उसे रोका जा सकता है। पर यदि मन में और विचार में कठिनाई को महसूस करना बंद कर देते हैं तो असली गुलामी शुरू होती है स तब जो वास्तव में अकल्याणकारी और अमंगल का द्योतक होता है वह हमें श्रेयस्कर और प्रिय लगने लगता है स हम ललचायी नजरों से उसे देखने लगते हैं स यह दासता का शायद निकृष्टतम रूप होता है।

वर्तमान में बच्चे बड़ी बड़ी डिग्रियां ले रहे हैं, अंग्रेजी फर्राटेदार बोल रहे हैं पर क्या नैतिकता व संस्कार उन बच्चों में नजर आती है तो जवाब मिलेगा नहीं या बहुत कम स पढ़ाई के नाम पर प्रेशर तो इतना बढ़ चुका है कि कई बच्चे डिप्रेशन में चले जा रहे और उनके दिमाग में चिड़चिड़ापन व पीछे रह जाने का भय बना हुआ रहता है स और जो बच्चे इन सभी परिस्थितियों से आगे बढ़कर ऊंचे पद को प्राप्त कर लेते हैं उनके पास इतना समय नहीं है कि कभी अपने माता पिता का हालचाल भी पूछ ले। बड़ी बड़ी डिग्रियां तो ले ली पर इतना संस्कार नहीं कि अपनों से बड़ो से कैसा वार्तालाप करें, उनको सम्मान दे, क्योंकि उन्हें तो सिर्फ अपना ऊंचा पद दिखता है बांकी सभी तुच्छ व निम्न नजर आते हैं, क्योंकि संसार को देखने का नजरिया वैसा ही बन गया है।

आज हम कई आतंकवाद व नक्सलवाद को देखते हैं, डॉक्टर व इंजीनियर की डिग्रियां पास में रहता है पर वे रास्ता भटककर गलत दिशा की ओर मुड़ चुके हैं। बड़े परमाणु व बम का प्रयोग देश की सुरक्षा के लिए बनाना छोड़कर, मानव जाति को मिटाने के लिए उसका प्रयोग कर रहे हैं। ये बहुत ही शिक्षित लोग हैं परंतु शिक्षा का सही उपयोग नहीं कर पा रहें हैं।

इन सभी का कारण यह है कि हमारे समुदाय से संस्कार गायब होते जा रहे हैं। हमारी संस्कृति व ऋषियों द्वारा दिया गया संस्कार वो रसायन है जो मानव को महामानव बनाती है। वर्तमान शिक्षा में विद्या का समावेश होना आवश्यक है क्योंकि शिक्षा सिर्फ अक्षर ज्ञान करवाती है व व्यक्ति को शिक्षित बनाती है अपितु विद्या यह सिखाती है कि उस शिक्षा का उपयोग सही दिशा में करें।

शिक्षा के साथ छात्रों को जीवन जीने की कला, जीवन प्रबंधन एवम मूल्यों की नैतिक शिक्षा की भी जरूरत है। वर्तमान स्थिति का समाधान संस्कार रूपी क्रांति की नई रोशनी में है। इसी के उजाले में नये जीवन मूल्य दिखाई देंगें। छात्रों की दशा सुधरेगी और उन्हें सही दिशा मिलेगी। इसकी शुरुआत हम शिक्षकों को करना होगा। हमें प्राथमिक कक्षा से ही बच्चों को संस्कार अपने शालाओं में देना होगा क्योंकि बच्चे पर उसके शिक्षक व शाला का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

हमारे शालाओं में हर वर्ग व हर धर्म के बच्चे आते हैं और संस्कार एक ऐसा बीज है जो सबके लिए फलित होता है। हम बसंत पर्व पर नये बच्चों को विद्यारंभ संस्कार करवाये और शिक्षा के साथ विद्या के क्रम का रोपण आरम्भ करें। जन्मदिवस संस्कार के माध्यम से बतायें कि मानव जीवन का लक्ष्य क्या है और हम उसे सुगढ़ कैसे बनाये।

खेल की प्रक्रिया में शिक्षक स्वयं शामिल हो, क्योंकि खेल खेल में हम बच्चों का सिर्फ शारिरिक ही नहीं, मानसिक विकास भी कर रहे होते हैं। बच्चा खेल के द्वारा संगठन का महत्व समझता है, टीमवर्क के साथ काम करना सीखता है।
शिक्षा संस्कार क्रांति से ही शिक्षा के परिदृश्य में छाया हुआ कुहासा मिटेगा और उसका विद्या वाला स्वरूप निखरकर सामने आयेगा। तभी पता चलेगा कि शिक्षा जीवन की सभी दृश्य एवम अदृश्य शक्तियों का विकास है, तभी जाना जा सकेगा कि श्रेष्ठ विचार और संस्कार से ही व्यक्ति गढ़े जाते हैं।

दीपमाला वैष्णव
कोंडागांव,बस्तर,छत्तीसगढ़
9753024524

माइक्रोफाइनेंस सफल जीवन की आसान राह

आज के समय में जब बेरोजगार और बेरोजगारी चुनावी शब्द बन कर रहे गये हो। इनकी याद शासन-प्रशासन को केवल चुनाव में आती हो। बेरोजगार आर्थिक समस्या से, मार्गदर्शन के आभाव में, टीम वर्क की कमी से जूझते हुए जब अपनी जिन्दगी से परेशान और हताश हो जाता है। ऐसे में उसे माइक्रोफाइनेंस डूबते को सहारे के रूप में प्रकट होता है। माइक्रोफाइनेंस या लघु वित्त, वित्तीय सेवाओं की वह प्रक्रिया है जिसमें गरीब और निम्न-आय वाले व्यक्तियों को छोटे-छोटे ऋण, बचत खाते, बीमा, और अन्य वित्तीय सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उन लोगों को वित्तीय समर्थन प्रदान करना है जो पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर हैं और जिन्हें आमतौर पर बैंकों द्वारा ऋण प्राप्त करना मुश्किल होता है। माइक्रोफाइनेंस की भूमिका सामाजिक, आर्थिक और वित्तीय दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ माइक्रोफाइनेंस की भूमिका को विभिन्न पहलुओं से समझाया गया है। माइक्रोफाइनेंस छोटे उद्यमों और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करता है, जिससे आर्थिक विकास में योगदान होता है। जब लोग छोटे-छोटे ऋण प्राप्त करते हैं, तो वे छोटे व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या अपने मौजूदा व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होती है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होते हैं, जिससे गरीबी कम करने में मदद मिलती है।

गरीबी उन्मूलन में माइक्रोफाइनेंस की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह उन लोगों को वित्तीय संसाधन प्रदान करता है जो पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं का उपयोग नहीं कर सकते। छोटे-छोटे ऋण, जिन्हें माइक्रोक्रेडिट कहा जाता है, गरीब परिवारों को अपनी आय बढ़ाने, अपने जीवन स्तर को सुधारने और अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

माइक्रोफाइनेंस विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता और व्यवसायिक अवसर प्रदान करके, माइक्रोफाइनेंस उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है। यह देखा गया है कि जब महिलाएं वित्तीय निर्णयों में शामिल होती हैं, तो वे परिवार और समुदाय के कल्याण के लिए बेहतर निर्णय लेती हैं।माइक्रोफाइनेंस सामाजिक न्याय और समावेशन को बढ़ावा देता है। यह उन लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है जो समाज के हाशिए पर हैं और जिनके पास पारंपरिक वित्तीय संस्थानों तक पहुंच नहीं है। इससे आर्थिक असमानता को कम करने में मदद मिलती है और समाज में अधिक समावेशी विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

माइक्रोफाइनेंस द्वारा प्रदान किए गए संसाधन गरीब परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा का लाभ उठाने में सक्षम बनाते हैं। जब परिवारों को वित्तीय स्थिरता मिलती है, तो वे स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक खर्च कर सकते हैं, जिससे उनकी संपूर्ण जीवन गुणवत्ता में सुधार होता है। इसी तरह, माता-पिता अपनी आय का एक हिस्सा बच्चों की शिक्षा पर खर्च कर सकते हैं, जिससे अगली पीढ़ी को बेहतर अवसर मिलते हैं।

माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से स्थानीय समुदायों में निवेश बढ़ता है, जिससे सामुदायिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। स्थानीय व्यवसायों को समर्थन मिलना, व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि और आर्थिक संबल प्रदान करना, ये सभी कारक समुदायों को अधिक समृद्ध और स्वावलंबी बनाते हैं।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान अपने ग्राहकों को वित्तीय शिक्षा और जागरूकता भी प्रदान करते हैं। यह ग्राहकों को वित्तीय निर्णय लेने में मदद करता है और उन्हें अपने आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन करने की समझ विकसित करता है। वित्तीय शिक्षा से न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक वित्तीय सुरक्षा में भी सुधार होता है।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान तेजी से नई तकनीकों और डिजिटल साधनों का उपयोग कर रहे हैं ताकि अपनी सेवाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकें। मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल भुगतान और अहनलाइन ऋण आवेदन जैसी तकनीकें वित्तीय सेवाओं को सुलभ और सस्ता बनाती हैं, जिससे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन बढ़ता है।माइक्रोफाइनेंस वित्तीय संस्थानों के लिए नवाचार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। ये संस्थान लगातार नए उत्पाद और सेवाएं विकसित कर रहे हैं ताकि गरीबों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इन नवाचारों में कृषि ऋण, लघु व्यवसाय ऋण, और आपातकालीन ऋण शामिल हैं, जो वित्तीय सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करते हैं।

कुछ माइक्रोफाइनेंस संस्थान पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम भी चलाते हैं। ये संस्थान पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करते हैं, जैसे सौर ऊर्जा, जल संरक्षण, और जैविक खेती। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक विकास भी होता है।माइक्रोफाइनेंस की भूमिका बहुआयामी है और यह न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर बल्कि सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यह वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करता है, गरीबी उन्मूलन में सहायता करता है, महिलाओं को सशक्त बनाता है और समग्र आर्थिक विकास में योगदान देता है।

माइक्रोफाइनेंस का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह पारंपरिक वित्तीय प्रणालियों की सीमाओं को पार करते हुए समाज के उन वर्गों तक पहुंचता है, जो अन्यथा वित्तीय सेवाओं से वंचित रह जाते। इस प्रकार, माइक्रोफाइनेंस एक शक्तिशाली उपकरण है जो न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक परिवर्तन भी ला सकता है, और इसे प्रभावी रूप से लागू करने से समाज में समग्र समृद्धि और स्थिरता लाई जा सकती है।

मनोज कुमार सिंह
गहमर,गाजीपुर, उ० प्र०
6204 755 404

(लेखक एक माइक्रो फाइनेंस कम्पनी में उच्च पद पर तैनात हैं और 20 सालो का इस क्षेत्र में अनुभव रखते हैं।)

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण के लिए तत्काल मिलें।

सोशलमीडिया कितना जरूरी?

सोशल मीडिया की अगर बात तो आज के समय बहुत कम सदस्य ही ऐसे मिलेगे जो सोशल मीडिया इस्तेमाल नही करते हो बाकि के सभी सदस्यों अपने पढ़ाई के लिए या काम के लिए या व्यापार के लिए सोशल मीडिया इस्तेमाल करते ही है और जरूरी भी है। इन सभी जरूरी बातों पर ध्यान बाद में दिया जाएगा। सबसे पहले जो सच्ची घटना घटी है उसके बारे में समझे।

दस अप्रैल को एक वरिष्ठ महिला साहित्यकार की बात, मुस्कान केशरी जी से हो रही थी। उन्हे अपनी पुस्तक प्रकाशित करवानी थी। इस बात की जानकारी लेने हेतु वो कॉल की थी तो मुस्कान केशरी जी ने सारी जानकारी दी और बोली कि आप अपनी रचनाएँ ईमेल के माध्यम से भेज दीजिए। तो वरिष्ठ साहित्यकार बोली- मुस्कान जी मुझे ईमेल चलाने नहीं आता है। वो तो पोता व्हाट्सएप चलाना सिखा दिया है तो चला लेते बाकि कुछ आता नहीं है। क्योकि मेरे समय में ये फोन वोन कहाँ था, इसलिए मुझे सही से चलाने नहीं आता है। हम लोगो के समय में तो पत्र चलता था। लेखिका बोली - ठीक है, आप पोस्ट के माध्यम से भेज दीजिए या फिर अपने पोता को बोलकर भेजवा दीजिएगा। वरिष्ठ साहित्यकार बोली - मुस्कान जी वो पढ़ता है तो उसके पास समय कहाँ की वो भेजे। ऐसे मै बोलकर देखती हुँ। तो लेखिका बोली - आप व्हाट्सएप पर ही भेज दीजिए। व्हाट्सएप पर तो आपको कोई परेशानी नहीं है मैम, अगर कोई परेशानी है तो बताए मै आपको समझा दुँगी ताकि आप सारी रचनाएँ भेज सके। तब वरिष्ठ साहित्यकार बोली - मुस्कान केशरी जी आप बहुत अच्छी है। आपको पता है एक दिन ऐसे ही एक फार्म आया था "नारी शक्ति सम्मान " का, उसमे भी ईमेल करना था। लेकिन मुझे आता नहीं था तो मैं कॉल करके बोली की मुझे ईमेल नही चलाना आता, क्या व्हाट्सएप पर भेज सकते हैं। तो वो लोग मना कर दिए और बोले ईमेल ही करना होगा अन्यथा वो फार्म नही डाल सकती हैं। तो वो अपने पोता को बोलकर - अपना परिचय और फोटो भेजवा देती है।

लेखिका बोली - होता है मैम अभी ईमेल पर ही ज्यादातर काम किया जाता है। वो सब छोड़िए और हार्दिक शुभकामनाएँ मैम आपको नारी शक्ति सम्मान के लिए। वरिष्ठ साहित्यकार बोलती - नही जी, मै चयनित नही हुँ। लेखिका बोली - पर क्यों वैसे कोई बात नहीं, मैम ये सब फार्म हर साल आता है आप अगले बार फिर से फार्म डालिए और फार्म को पढ़कर डालिए क्योकि हर जगह का चयन प्रतिक्रिया अलग-अलग होता हैं। सहित्यकार बोली - केशरी जी मुझे आज तक जितने सम्मान पत्र प्राप्त हुए वो सब मैने अपने परिचय पर डाला था लेकिन आज तक फेसबुक पर कुछ डाला नहीं और उन्होने फेसबुक आईडी माँगा था और मै दे दी थी। उन्होने कॉल करके बताया - मैम आपने अपने परिचय पर जितने सम्मान पत्र डाला, वो आपको सच में मिले है या नहीं। क्योकि फेसबुक पर कुछ नहीं डाला हुआ है इसलिए इन सब सम्मान पत्र की जाँच नही की जा पाई इसलिए आप इस सम्मान के लिए चयनित नही है। उसके बाद काफी सारी बाते हुई लेकिन हर बात लिखना संभव नहीं। अब चलिए बात करते हैं और समझते हैं कि आप को सारे सम्मान पत्र बहुत मेहनत से प्राप्त हुआ लेकिन आपने उसें फेसबुक पर नहीं डाला इसलिए आपका चयन नही हुआ। सोचने वाली बात है शायद इसलिए लोग कही भी खाने-पीने, घूमने-फिरने, जाते हैं तो मोबाइल साथ ले जाते हैं क्योंकि आज के टाइम में सबूत चाहिए और हाँ सोशल मीडिया पर लाइव, शेयर भी।

आज के समय में लोग अपने आँखों से कुछ भी देखना भूल चूके है। अपने हाथो से मोबाइल में कैद करते हैं और फिर मोबाइल में ही देखकर खुश होते हैं। बिना सोशल मीडिया के या बिना मोबाइल के शायद इस दुनिया में रहना मुश्किल सा लग रहा है। क्योंकि जितनी तेजी से लोग मोबाइल या सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं जितने ही तेजी से सोशल काइम भी हो रहे हैं। इसलिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करें और सतर्क रहे, सुरक्षित रहे।।

मुस्कान केशरी
मुजफ्फरपुर बिहार
सम्पर्क सूत्र : 6203124315

जटा विराज गंगधार शीश चंद्र सोहते।
निहारते स्वरूप तेज तीन लोक मोहते।।
विराजमान कंठ नाग है त्रिशूल हाथ में।
जहाँदृजहाँ चले शिवा सदैव बैल साथ में।।

लपेट बाघ छाल अंग भस्म देह साजते।
बढ़े महेश पाँव व्योम ताल ढोल बाजते।।
निमग्न भूतनाथ ध्यान बैठ मुक्ति धाम में।
शिवा धरा समीर अग्नि नीर आसमान में।।

शिवा प्रसन्न होय बेलपत्र दूध नीर से।
प्रसून भांग घी दही गुलाल औ अबीर से।।
नमः शिवाय जाप आठ याम सोमवार को।
करे पुकार दर्श देवता लगे कतार को।।

खुले त्रिनेत्र क्रोध ताप विश्व धूम्र सा जले।
कृपा करे महेश तो मनुष्य मोद में पले।।
करे प्रणाम भक्त नीलकंठ के स्वरूप को।
कृपालु तेजपुंज आदिदेवता अनूप को।।

प्रिया देवांगन "प्रियू"
राजिम
जिला - गरियाबंद

ऐ सुन मेरे भाई मत बोल तीखा,
अभी तो मैंने बस चलना है सीखा।
पूरा है भरोसा स्वयं पर मुझको,
मुकद्दर से मैंने लड़ना है सीखा।

लगा ले चाहे कोई जोर कितना,
दुसाध्य है यारो मुझको जीतना।
तोड़कर रहेंगे हर एक आलान,
मैंने भी तो अब उड़ना है सीखा।

कहता हूँ जो वो मैं कर के रहूँगा,
जुल्मों सितम अब ना हरगिज सहूँगा।
मुझे बैसाखी की नहीं है जरूरत ,
अकेले ही मैंने लड़ना है सीखा।

चाहे जमाना ये कहर बरपाए,
राह में चाहे फूलों को बिछाए।
पड़ता नहीं अब कोई फर्क मुझपे,
शोलों पर मैंने चलना है सीखा।

हटेंगे ना पीछे अब कदम मेरे,
चाहे हो कोहरा जितना घनेरे,
करेंगे एकदिन अम्बर को वश में,
अनंत में विचरण करना है सीखा।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मुंगेर, बिहार

"आखिर क्यों"

गोधूलि बेला में,
काँपती दिये की लौ में,
दिखता है किसी का चेहरा....
कौन है वो,
मैं सोचता हूँ
बार बार ...लगातार
और इस क्षण में मैं
पहचानने की कोशिश करता हूँ
स्वयं के अस्तित्व को
कहीं यह मेरा प्रतिरूप तो नहीं
फ़िर, दिल सोचने को मजबूर होता है
मेरा प्रतिरूप मुझसे दूर क्यों
शायद नहीं,
ये तो तुम हो,
जो मुझसे दूर चली गयी हो......
क्यों..... "आखिर क्यों"

संतोष शर्मा साहिल
गाजीपुर

एवरग्रीन फिल्म प्रोडक्शन हाउस

लंका-वाराणसी

यदि आप शार्ट फिल्म में एक्टिंग मॉडलिंग, फैंशन शो, फोटो शूट कहानी एवं स्क्रिप्ट राईटिंग में कैरियर बनाना चाहते हैं तो

संम्पर्क सूत्र- 9289615654

एवरग्रीन मिसेज इंडिया कम्पटीशन
25 फरवरी 2025

एडमिशन राउंड आपके शहर में जल्द

Website : www.evergreenmrsindia.in | Email : egreenmrs@gmail.com

एवरग्रीन बिजनेस

ट्रामा सेंटर के पीछे,भगवानपुर, लंका, वाराणसी (उ0प्र0)

- एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
- एवरग्रीन वेबसाइट डिजाइन
- एवरग्रीन न्यूट्रिशन प्वाइंट
- एगवरग्रीन बुक पब्लिशर
- एवरग्रीन एडवरटाइजिंग
- एवरग्रीन टूरिस्ट प्वाइंट
- एवरग्रीन मैगजीन

आकर्षक और उचित दर पर पुस्तक प्रकाशन 20 दिन के अंदर पुस्तक आप तक
(प्रूफ रीडिंग OK होने के 20 दिन बाद)

आपके बजट में आपकी संस्था का विज्ञापन

आप के जरूरत के हिसाब से हिन्दी एवं अंग्रेजी में आपकी वेबसाइट
24 घंटे सेवा आनलाइन सपोर्ट

कम बजट एवं शानदार लोकेशन पर आपकी शार्ट फिल्म निर्माण

पूर्वांचल के सभी पर्यटन स्थल पर सुरक्षित एवं उत्तम व्यवस्था

मॉडलिंग व एक्टिंग के लिए बायोडाटा भेजें

महिलाओं की खास फैंशन, फिल्म,ग्लैमर एवं लाइफ स्टाइल पर आधारित पत्रिका एवरग्रीन

https://evergreenmrsindia.in
egreenmrs@gmail.com
9289615645

जल्द ही आपके शहर में भी ब्रांच
06 दिसम्बर 2024 से आप की सेवा में